

गुलज़ार



## गुलज़ार (गीतकार)

गुलज़ार

गुलज़ार

जन्म नाम सम्पूर्ण सिंह कालरा

जन्म अगस्त 18, 1936 (आयु 80 वर्ष)

दीना, झेलम जिला, पंजाब, ब्रिटिश भारत

व्यवसाय निर्देशक,

गीतकार,

पटकथा लेखक,

निर्माता,

कवि

कार्यकाल 1961 - वर्तमान

जीवनसाथी राखी गुलज़ार

सन्तान मेघना गुलज़ार

पुरस्कार और सम्मान

अकादमी पुरस्कार

*Best Original Song*

*2009 Slumdog Millionaire*

गुलज़ार

**फिल्मफेयर पुरस्कार**

***Best Lyricist***

***1977 Do diwane is shahar mein... Gharaonda***

***1979 Aanewala pal jaane wala hai... Gol Maal***

***1980 Hazaar raahen... Thodi Si Bewafaai***

***1983 Tujhse naaraz nahin zindagi... Masoom***

***1988 Mera kuch saamaan... Ijaazat***

***1991 Yaara sili sili... Lekin...***

***1998 Chhaiyya Chhaiyya... Dil Se***

***2003 Saathiya... Saathiya***

***Best Dialogue***

***1971 Anand***

***1973 Namak Haraam***

***1996 Maachis***

***2003 Saathiya***

***Best Story***

गुलज़ार

*1996 Maachis*

*Best Director*

*1976 Mausam*

*Best Feature Film (Critics)*

*1975 Aandhi*

*2002 Lifetime Achievement Award*

**राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार**

*Best Director*

*1976 Mausam*

*Best Lyricist*

*1988 Mera kuch saaman... Ijaazat*

*1991 Yaara sili sili... Lekin...*

*Best Film for Wholesome Entertainment*

*1996 Maachis*

*Best Screenplay*

*1972 Koshish*

*Best Documentary*

*1991 Ustad Amjad Ali Khan*

*1991 Pt Bhimsen Joshi*

गुलज़ार नाम से प्रसिद्ध सम्पूर्ण सिंह कालरा (जन्म-१८ अगस्त १९३६)[1] हिन्दी फ़िल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार हैं। इसके अतिरिक्त वे एक कवि, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक तथा नाटककार हैं। उनकी रचनाए मुख्यतः हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी में हैं, परन्तु ब्रज भाषा, खड़ी बोली, मारवाड़ी और हरियाणवी में भी इन्होने रचनाये की। गुलज़ार को वर्ष २००२ में सहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष २००४ में भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण से भी सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष २००९ में डैनी बॉयल निर्देशित फ़िल्म स्लम्डाग मिलियनेयर में उनके द्वारा लिखे गीत जय हो के लिये उन्हे सर्वश्रेष्ठ गीत का ऑस्कर पुरस्कार पुरस्कार मिल चुका है। इसी गीत के लिये उन्हे ग्रीमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

**प्रारम्भिक जीवन संपादित करें**

गुलज़ार

गुलज़ार का जन्म भारत के झीलम जिला पंजाब के दीना गाँव में, जो अब पाकिस्तान में है, १८ अगस्त १९३६ को हुआ था। गुलज़ार अपने पिता की दूसरी पत्नी की इकलौती संतान हैं। उनकी माँ उन्हें बचपन में ही छोड़ कर चल बसीं। माँ के आँचल की छाँव और पिता का दुलार भी नहीं मिला। वह नौ भाई-बहन में चौथे नंबर पर थे। बंद्वारे के बाद उनका परिवार अमृतसर (पंजाब, भारत) आकर बस गया, वहीं गुलज़ार साहब मुंबई चले गये। वर्ली के एक गेरेज में वे बतौर मेकेनिक काम करने लगे और खाली समय में कवितायें लिखने लगे। फ़िल्म इंडस्ट्री में उन्होंने बिमल राय, हषिकेश मुखर्जी और हेमंत कुमार के सहायक के तौर पर काम शुरू किया। बिमल राय की फ़िल्म बंदनी के लिए गुलज़ार ने अपना पहला गीत लिखा। गुलज़ार त्रिवेणी छन्द के सूजक हैं।

रचनात्मक लेखन संपादित करें

गुजराल द्वारा लिखे गए पुस्तकों की सूची-

चौरस रात (लघु कथाएँ, 1962)

गुलज़ार

जानम (कविता संग्रह, 1963)

एक बूँद चाँद (कविताएँ, 1972)

राकी पार (कथा संग्रह, 1997)

रात, चाँद और मैं (2002)

रात पश्मीने की

खराशें (2003)

चलचित्र सृजन संपादित करें

निर्देशन संपादित करें

गुलज़ार ने बतौर निर्देशक अपना सफर १९७१ में मेरे अपने से शुरू किया। १९७२ में आयी संजीव कुमार और जया भादुड़ी अभिनीत फिल्म कोशिश जो एक गूँगे बहरे दम्पति के जीवन परआधारित कहानी थी, ने आलोचकों को भी हैरान कर दिया। इसके बाद गुलज़ार ने संजीव कुमार के साथ आंधी (१९७५), मौसम (1975), अंगूर (१९८१) और नमकीन (१९८२) जैसी फिल्में निर्देशित की। गुलज़ार द्वारा निर्देशित चलचित्रों की सूची-

गुलज़ार

**मेरे अपने (1971)**

**परिचय (1972)**

**कोशिश (1972)**

**अचानक (1973)**

**खुशबू (1974)**

**आँधी (1975)**

**मौसम (1976)**

**किनारा (1977)**

**किताब (1978)**

**अंगूर (1980)**

**नमकीन (1981)**

**मीरा**

**इजाजत (1986)**

**लेकिन (1990)**

**लिबास (1993)**

**माचिस (1996)**

गुलज़ार

हु दू दू (1999)

गीत लेखन संपादित करें

गुलज़ार द्वारा लिखे गए गीतों वाले फ़िल्मों की सूची-

ओमकारा

रेनकोट

पिंजर

दिल से

आँधी

दूसरी सीता

इजाजत

पटकथा लेखन संपादित करें

आँधी (1975) - पटकथा, संवाद

मीरा (1979) - पटकथा, संवाद

पुरस्कार और सम्मान संपादित करें

गुलज़ार

**फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ गीतकार - १९७७, १९७९, १९८०,  
१९८३, १९८८, १९८८, १९९३, १९९८, २००२, २००६**

**साहित्य अकादमी पुरस्कार २००२ में**

**पद्मभूषण - २००४** गुलज़ार को भारत सरकार द्वारा सन  
२००४ में कला क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।  
ये महाराष्ट्र राज्य से हैं।

**ऑस्कर (सर्वश्रेष्ठ मौलिक गीत का) - २००९ में** अंग्रेजी  
चलचित्र 'स्लमडॉग मिलियनयर' के गीत 'जय हो' के लिए

**ग्रैमी पुरस्कार- २०१० में।**

**दादा साहब फाल्के सम्मान - २०१३[2][3]**

**सन्दर्भ संपादित करें**

↑ हजार चेहरों वाले गुलज़ार

↑ "Gulzar to get Dadasaheb Phalke award [गुलज़ार को मिलेगा दादा साहब फाल्के पुरस्कार]" (अंग्रेजी में).  
इण्डिया टुडे डॉट इन (इण्डिया टुडे समूह). १२ अप्रैल २०१४.  
<http://indiatoday.intoday.in/story/gulzar-to-get-dadasaheb-phalke-award/1/355422.html>.

गुलज़ार

अभिगमन तिथि: १२ अप्रैल २०१४.

↑ "गुलज़ार को मिला दादा साहब फाल्के". बीबीसी हिन्दी. १२ अप्रैल २०१४.

[http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2014/04/140412\\_gulzar\\_phalke\\_award\\_vt.shtml](http://www.bbc.co.uk/hindi/india/2014/04/140412_gulzar_phalke_award_vt.shtml). अभिगमन तिथि: १२ अप्रैल २०१४.

बाहरी कड़ियाँ संपादित करें

गुलज़ार (कविता कोश)

इब्ने बतूता के जूते ने की गुलजार की फ़ज़ीहत  
इंटरनेट मूकी डेटाबेस पर गुलज़ार

=====

तेरी आँखें हैं या सजदे में हैं मासूम नमाज़ी  
पलकें खुलती हैं तो यूं गूँज के उठती है नज़र

जैसे मंदिर से जरस की चले नमनाक सदा  
और झुकती हैं तो बस जैसे अज्ञान खत्म हुई हो

=====

मैं अपने होठों से चुन रहा हूँ तुम्हारी साँसों की आयतों को  
कि जिस्म के इस हसीन काबे पे रुह सजदे बिछा रही है

=====

तुम्हारे हाथों को चूमकर, छूके अपनी आँखों से आज मैंने  
जो आयतें पढ़ नहीं सका, उनके लम्स महसूस कर लिए हैं

=====

मैंने रखी हुई हैं आँखों पर  
तेरी गमगीन-सी उदास आखें  
जैसे गिरजे में रक्खी खामोशी  
जैसे रहलों पे रक्खी अन्जीलें

एक आंसू गिरा दो आँखों से  
कोई आयत मिले नमाज़ी को  
कोई हफ्त-ए-कलाम-ए-पाक मिले

=====

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ  
कुचलता हुआ घास की कलगियाँ  
गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की छुपता हुआ  
जिनके पीछे से  
निकला चला जा रहा था वह सूरज  
तआकुब में था उसके मैं  
गिरफ्तार करने गया था उसे  
जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

=====

ज़िंदगी क्या है जानने के लिये

गुलज़ार

ज़िंदा रहना बहुत जरूरी है  
आज तक कोई भी रहा तो नहीं

सारी वादी उदास बैठी है  
मौसमे गुल ने खुदकशी कर ली  
किसने बरुद बोया बागे मे

आओ हम सब पहन ले आइने  
सारे देखेंगे अपना ही चेहरा  
सारे हसीन लगेंगे यहाँ

है नहीं जो दिखाई देता है  
आइने पर छपा हुआ चेहरा  
तर्जुमा आइने का ठीक नहीं

हम को गलिब ने येह दुआ दी थी

तुम सलामत रहो हज़ार बरस  
ये बरस तो फक्त दिनो मे गया

लब तेरे मीर ने भी देखे हैं  
पखुड़ी एक गुलाब की सी है  
बात सुनते तो गलिब रो जाते

ऐसे बिखरे हैं रात दिन जैसे  
मोतियो वाला हार टूट गया  
तुमने मुझको पिरो के रखा था

=====

ज़रा पैलेट सम्भालो रंगोबू का  
मैं कैनवास आसमां का खोलता हूँ

बनाओ फिर से सूरत आदमी की!

गुलज़ार

साथ में एक और रंग बोनस में.. ईद के चाँद पर होली का रंग!

जहां नुमा एक होटल है नां...

जहां नुमा के पीछे एक टी.वी. टॉवर है नां...

चाँद को उसके ऊपर चढ़ते देखा था कल!

होली का दिन था  
मुंह पर सारे रंग लगे थे  
थोड़ी देर में ऊपर चढ़ के  
टांग पे टांग जमा के ऐसे बैठ गया था,  
होली की खबरों में लोग उसे भी जैसे  
अब टी.वी. पर देख रहे होंगे!!

=====

उसे फिर लौट कर जाना है ये मालूम था उस वक्त भी  
जब शाम की सुर्ख-ओ-सुनहरी रेत पर वो दौड़ती आई थी  
और लहरा के यूँ आगोश में बिखरी थी

जैसे पूरा का पूरा समंदर ले के उमड़ी है  
उसे जाना है वो भी जानती तो थी  
मगर हर रात फिर भी हाथ रखकर चाँद पर खाते रहे कसमें  
ना मैं उतरूँगा उस साँसों के साहिल से  
ना वो उतरेगी मेरे आसमाँ पर झूलते तारों की पींगों से  
मगर जब कहते कहते दास्ताँ, फिर वक्त ने लम्बी जम्हाई ली  
ना वो ठहरी, ना मैं ही रोक पाया था  
बहुत फूँका सुलगते चाँद को,  
फिर भी उसे इक इक कला घटते हुए देखा  
बहुत खींचा समंदर को मगर साहिल तलक हम ला नहीं पाए  
सहर के वक्त, फिर उतरे हुए साहिल पे इक  
झूबा हुआ, खाली समंदर था ।

=====

कदीम वजनी इमारतों में,  
कुछ ऐसे रखा है, जैसे कागज पे बट्टा रख दें,  
दबा दें, तारीख उड़ ना जाये,

मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?  
कभी कभी वक्त यूँ भी लगता है मुझको  
जैसे, गुलाम है!  
आफताब का एक दहकता गोला उठा के  
हर रोज पीठ पर वह, फलक पर चढ़ता है चप्पा  
चप्पा कदम जमाकर,  
वह पूरा कोहसार पार कर के,  
उतारता है उफुक कि दहलीज़ पर दहकता  
हुआ सा पत्थर,  
टिका के पानी की पतली सुतली पे, लौट  
जाता है अगले दिन का उठाने गोला,  
और उसके जाते ही  
धीरे धीरे वह पूरा गोला निगल के बाहर निकलती है  
रात, अपनी पीली सी जीभ खोले,  
गुलाम है वक्त गर्दिशों का,  
कि जैसे उसका गुलाम मैं हूँ!!

तुम्हारी फुर्कत में जो गुजरता है,  
और फिर भी नहीं गुजरता,  
मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?  
कि वक्त बांगे जरस नहीं जो बता रहा है  
कि दो बजे हैं,  
कलाइ पर जिस अकाब को बांध कर  
समझता हूँ वक्त है,  
वह वहाँ नहीं है!  
  
वह उड़ चुका  
जैसे रंग उड़ता है मेरे चेहरे का, हर तहयुर पे,  
और दिखता नहीं किसी को,  
वह उड़ रहा है कि जैसे इस बेकराँ समंदर से  
भाप उड़ती है  
और दिखती नहीं कहीं भी,

वक्त की आँख पे पट्टी बांध के।  
चोर सिपाही खेल रहे थे—  
रात और दिन और चाँद और मैं—  
जाने कैसे इस गर्दिश में अटका पाँव,  
दूर गिरा जा कर मैं जैसे,  
रौशनियों के धक्के से  
परछाई जमीं पर गिरती है!  
धेया छोने से पहले ही—  
वक्त ने चोर कहा और आँखे खोल के  
मुझको पकड़ लिया—

=====

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ  
कुचलता हुआ घास की कलगियाँ  
गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की, छुपता हुआ  
जिनके पीछे से  
निकला चला जा रहा था वह सूरज

तआकुब में था उसके मैं  
गिरफ्तार करने गया था उसे  
जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

=====

शहर में आदमी कोई भी नहीं क़त्ल हुआ,

नाम थे लोगों के जो, क़त्ल हुये.

सर नहीं काटा, किसी ने भी, कहीं पर कोई—  
लोगों ने टोपियाँ काटी थीं कि जिनमें सर थे!

और ये बहता हुआ सुख्ख लहू है जो सड़क पर,  
जबह होती हुई आवाजों की गर्दन से गिरा था

=====

आग का पेट बड़ा है!

आग को चाहिए हर लहजा चबाने के लिये  
खुश्क करारे पत्ते,  
आग कर लेती है तिनकों पे गुजारा लेकिन—

आशियानों को निगलती है निवालों की तरह,  
आग को सब्ज हरी टहनियाँ अच्छी नहीं लगतीं,  
दूंधती है, कि कहीं सूखे हुये जिस्म मिलें!

उसको जंगल कि हवा रास बहुत है फिर भी,  
अब गरीबों कि कई बस्तियों पर देखा है हमला करते,  
आग अब मंदिरों-मस्जिद की गजा खाती है!  
लोगों के हाथों में अब आग नहीं—  
आग के हाथों में कुछ लोग हैं अब

---

बुरा लगा तो होगा ऐ खुदा तुझे,  
दुआ में जब,  
जम्हाई ले रहा था मैं—  
दुआ के इस अमल से थक गया हूँ मैं!  
मैं जब से देख सुन रहा हूँ

तब से याद है मुझे,  
खुदा जला बुझा रहा है रात दिन,  
खुदा के हाथ में है सब बुरा भला—  
दुआ करो !  
  
अजीब सा अमल है ये  
ये एक फर्जी गुफ्तगू  
और एकतरफा—एक ऐसे शख्स से,  
ख्याल जिसकी शक्ल है  
ख्याल ही सबूत है.

---

मैं दीवार की इस जानिब हूँ.  
इस जानिब तो धूप भी है हरियाली भी !  
ओस भी गिरती है पत्तों पर,  
आ जाये तो आलसी कोहरा,  
शाख पे बैठा घंटों ऊँघता रहता है.  
बारिश लम्बी तारों पर नटनी की तरह थिरकती,

आँखों से गुम हो जाती है,  
जो मौसम आता है, सारे रस देता है !

लेकिन इस कच्ची दीवार की दूसरी जानिब,  
क्यों ऐसा सन्नाटा है  
कौन है जो आवाज नहीं करता लेकिन—  
दीवार से टेक लगाए बैठा रहता है.

---

पिछली बार मिला था जब मैं  
एक भयानक जंग में कुछ मशरूफ थे तुम  
नए नए हथियारों की रौनक से काफी खुश लगते थे  
इससे पहले अन्तुला में  
भूख से मरते बच्चों की लाश दफनाते देखा था  
और एक बार ... एक और मुल्क में जलजला देखा  
कुछ शहरों के शहर गिरा के दूसरी जानिब  
लौट रहे थे

तुम को फलक से आते भी देखा था मैंने  
आस पास के सच्चारों पर धूल उड़ाते  
कूद फलांग के दूसरी दुनियाओं की गर्दिश  
तोड़ ताड़ के गेलेक्सीज के महवर तुम  
जब भी जमीं पर आते हो  
भोंचाल चलाते और समंदर खौलाते हो  
बड़े 'इरेटिक' से लगते हो  
काएनात में कैसे लोगों की सोहबत में रहते हो तुम

---

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैंने—

काले घर में सूरज रख के,  
तुमने शायद सोचा था, मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे,  
मैंने एक चिराग जला कर,  
अपना रास्ता खोल लिया

तुमने एक समंदर हाथ में लेकर, मुझ पर ढेल दिया  
मैंने नूह की कश्ती उसके ऊपर रख दी  
काल चला तुमने, और मेरी जानिब देखा  
मैंने काल को तोड़ के लम्हा लम्हा जीना सीख लिया

मेरी खुदी को तुमने चंद चमत्कारों से मारना चाहा  
मेरे एक प्यादे ने तेरा चाँद का मोहरा मार लिया –

मौत की शह देकर तुमने समझा था अब तो मात हुई  
मैंने जिस्म का खोल उतर के सौंप दिया – और  
रूह बचा ली

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर अब तुम देखो बाजी

---

बस चन्द करोड़ों सालों में

सूरज की आग बुझेगी जब  
और राख उड़ेगी सूरज से  
जब कोई चाँद न ढूबेगा  
और कोई जमीं न उभरेगी  
तब ठंडा बुझा इक कोयला सा  
टुकड़ा ये जमीं का घूमेगा  
भटका भटका  
मध्यम खिकिसत्री रोशनी में!

मैं सोचता हूँ उस वक्त अगर  
कागज पे लिखी इक नज़म कहीं उड़ते उड़ते  
सूरज में गिरे  
तो सूरज फिर से जलने लगे !!

---

अपने "सन्तूरी" सितारे से अगर बात करूँ  
तह-ब-तह छील के आफाक कि पते

गुलज़ार

कैसे पहुँचेगी मेरी बात ये अफ़लाक के उस पर भला ?  
कम से कम “नूर की रफ्तार” से भी जाए अगर  
एक सौ सदियाँ तो खामोश खलाओं से गुजरने में लगेंगी  
कोई मादा है मेरी बात में तो  
“नून” के नुक्के सी रह जाएगी “ब्लैक होल” गुजर के  
क्या वो समझेगा ?  
मैं समझाऊंगा क्या ?

---

बहुत बौना है ये सूरज ....!  
हमारी कहकशाँ की इस नवाही सी ‘गैलेक्सी’ में  
बहुत बौना सा ये सूरज जो रौशन है...  
ये मेरी कुल हदों तक रौशनी पहुँचा नहीं पाता  
मैं माझ और जुपिटर से जब गुजरता हूँ  
भँवर से ब्लैक होलों के  
मुझे मिलते हैं रस्ते में  
सियह गिर्दबि चकराते ही रहते हैं

मसल के जुस्तजु के नंगे सहराओं में वापस

फेंक देते हैं

जमीं से इस तरह बाँधा गया हूँ मैं

गले से ग्रैविटी का दायमी पट्टा नहीं खुलता !

---

रात में जब भी मेरी आँख खुले

नंगे पाँव ही निकल जाता हूँ

कहकशाँछू के निकलती है जो इक पगडंडी

अपने पिछवाड़े के "सन्तुरी" सितारे की तरफ

दूधिया तारों पे पाँव रखता

चलता रहता हूँ यही सोच के मैं

कोई सम्मारा अगर जागता मिल जाए कहीं

इक पड़ोसी की तरह पास बुला ले शायद

और कहे

आज की रात यहीं रह जाओ

तुम जमीं पर हो अकेले

## मैं यहाँ तन्हा हूँ

---

उसे फिर लौट कर जाना है ये मालूम था उस वक्त भी  
जब शाम की सुख्ख-ओ-सुनहरी रेत पर वो दौड़ती आई थी  
और लहरा के यूँ आगोश में बिखरी थी  
जैसे पूरा का पूरा समंदर ले के उमड़ी है  
उसे जाना है वो भी जानती तो थी  
मगर हर रात फिर भी हाथ रखकर चाँद पर खाते रहे कसमें  
ना मैं उतरूँगा उस साँसों के साहिल से  
ना वो उतरेगी मेरे आसमाँ पर झूलते तारों की पींगों से  
मगर जब कहते कहते दास्ताँ, फिर वक्त ने लम्बी जम्हाई ली  
ना वो ठहरी, ना मैं ही रोक पाया था  
बहुत फूँका सुलगते चाँद को,  
फिर भी उसे इक इक कला घटते हुए देखा  
बहुत खींचा समंदर को मगर साहिल तलक हम ला नहीं पाए  
सहर के वक्त, फिर उतरे हुए साहिल पे इक

दूबा हुआ, खाली समंदर था ।

---

हम को मन की शक्ति देना, मन विजय करें  
दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें।

भेद भाव अपने दिल से साफ कर सकें  
दोस्तों से भूल हो तो माफ़ कर सके  
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें  
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें  
हमको मन की शक्ति देना।

मुश्किलें पड़े तो हम पे, इतना कर्म कर  
साथ दें तो धर्म का चलें तो धर्म पर  
खुद पर हौसला रहें बदी से न डरें  
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें  
हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें।

---

मुझे खर्ची में पूरा एक दिन, हर रोज़ मिलता है  
मगर हर रोज़ कोई छीन लेता है,  
झपट लेता है, अंटी से  
कभी खीसे से गिर पड़ता है तो गिरने की  
आहट भी नहीं होती,  
खरे दिन को भी खोटा समझ के भूल जाता हूँ मैं  
गिरेबान से पकड़ कर मांगने वाले भी मिलते हैं  
"तेरी गुजरी हुई पुश्तों का कर्जा है, तुझे किश्तें चुकानी है"  
जबरदस्ती कोई गिरवी रख लेता है, ये कह कर  
अभी 2-4 लम्हे खर्च करने के लिए रख ले,  
बकाया उम्र के खाते में लिख देते हैं,  
जब होगा, हिसाब होगा  
बड़ी हसरत है पूरा एक दिन इक बार मैं  
अपने लिए रख लूँ,  
तुम्हारे साथ पूरा एक दिन

## बस खर्च करने की तमन्ना है !!

---

रात चुपचाप दबे पाँव चली जाती है  
रात खामोश है रोती नहीं हँसती भी नहीं  
कांच का नीला सा गुम्बद है, उड़ा जाता है  
खाली-खाली कोई बजरा सा बहा जाता है  
चाँद की किरणों में वो रोज़ सा रेशम भी नहीं  
चाँद की चिकनी डली है कि घुली जाती है  
और सन्नाटों की इक धूल सी उड़ी जाती है  
काश इक बार कभी नींद से उठकर तुम भी  
हिज्ज की रातों में ये देखो तो क्या होता है

---

देखो, आहिस्ता चलो, और भी आहिस्ता ज़रा  
देखना, सोच-सँभल कर ज़रा पाँव रखना,  
ज़ोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं.

काँच के ख्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में,  
ख्वाब टूटे न कोई, जाग न जाये देखो,  
जाग जायेगा कोई ख्वाब तो मर जाएगा

---

पूरे का पूरा आकाश धुमा कर बाज़ी देखी मैंने  
काले घर में सूरज रख के,  
तुमने शायद सोचा था, मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे,  
मैंने एक चिराग जला कर,  
अपना रस्ता खोल लिया.  
तुमने एक समन्दर हाथ में ले कर, मुझ पर ठेल दिया।  
मैंने नूह की कश्ती उसके ऊपर रख दी,  
काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा,  
मैंने काल को तोड़ के लम्हा-लम्हा जीना सीख लिया.  
मेरी खुदी को तुमने चन्द चमत्कारों से मारना चाहा,  
मेरे इक प्यादे ने तेरा चाँद का मोहरा मार लिया  
मौत की शह दे कर तुमने समझा अब तो मात हुई,

मैंने जिस्म का खोल उतार के सौंप दिया,  
और रुह बचा ली,  
पूरे-का-पूरा आकाश घुमा कर अब तुम देखो बाज़ी।

---

इक इमारत  
है सराय शायद,  
जो मेरे सर में बसी है.  
सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते हुए जूतों की धमक,  
बजती है सर में  
कोनों-खुदरों में खड़े लोगों की सरगोशियाँ,  
सुनता हूँ कभी  
साज़िशें पहने हुए काले लबादे सर तक,  
उड़ती हैं भूतिया महलों में उड़ा करती हैं  
चमगादड़ें जैसे  
इक महल है शायद!  
साज़ के तार चट्ठते हैं नसों में

कोई खोल के आँखें,  
पत्तियाँ पलकों की झपकाके बुलाता है किसी को!  
चूल्हे जलते हैं तो महकी हुई 'गन्दुम' के धुएँ में,  
खिड़कियाँ खोल के कुछ चेहरे मुझे देखते हैं!  
और सुनते हैं जो मैं सोचता हूँ!  
एक, मिट्टी का घर है  
इक गली है, जो फ़क़त धूमती ही रहती है  
शहर है कोई, मेरे सर में बसा है शायद!

---

अभी न पद्दि गिराओ, ठहरो, कि दास्ताँ आगे और भी है  
अभी न पद्दि गिराओ, ठहरो!  
अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं  
अभी तो किरदार ही बुझे हैं  
अभी सुलगते हैं रूह के ग़म, अभी धड़कते हैं दर्द दिल के  
अभी तो एहसास जी रहा है  
यह लौ बचा लौ जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है

यह लौ बचा लौ यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगूला बनकर,  
यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को लेकर,  
कहीं तो अंजाम-ओ-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे,  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

---

एक बौछार था वो शख्स,  
बिना बरसे किसी अब्र की सहमी सी नमी से  
जो भिगो देता था...  
एक बौछार ही था वो,  
जो कभी धूप की अफशां भर के  
दूर तक, सुनते हुए चेहरों पे छिड़क देता था  
नीम तारीक से हाँल में आंखें चमक उठती थीं

सर हिलाता था कभी झूम के टहनी की तरह,  
लगता था झोंका हवा का था कोई छेड़ गया है  
गुनगुनाता था तो खुलते हुए बादल की तरह

मुस्कराहट में कई तरबीं की झनकार छुपी थी  
गली क्रासिम से चली एक ग़ज़ल की झनकार था वो  
एक आवाज़ की बौछार था वो!!

---

खाली काग़ज पे क्या तलाश करते हो?  
एक खामोश-सा जवाब तो है।

डाक से आया है तो कुछ कहा होगा  
"कोई वादा नहीं... लेकिन  
देखें कल वक्त क्या तहरीर करता है!"

या कहा हो कि... "खाली हो चुकी हूँ मैं  
अब तुम्हें देने को बचा क्या है?"

सामने रख के देखते हो जब  
सर पे लहराता शाख का साया

हाथ हिलाता है जाने क्यों?

कह रहा हो शायद वो...

"धूप से उठके दूर छाँव में बैठो!"

सामने रौशनी के रख के देखो तो  
सूखे पानी की कुछ लकीरें बहती हैं

"इक ज़मीं दोज़ दरया, याद हो शायद  
शहरे मोहनजोदरो से गुज़रता था!"

उसने भी वक्त के हवाले से  
उसमें कोई इशारा रखा हो... या  
उसने शायद तुम्हारा खत पाकर  
सिर्फ इतना कहा कि, लाजवाब हूँ मैं!

---

न आने की आहट न जाने की टोह मिलती है

कब आते हो कब जाते हो  
इमली का ये पेड़ हवा में हिलता है तो  
ईंटों की दीवार पे परछाई का छीटा पड़ता है  
और ज़ज्ब हो जाता है,  
जैसे सूखी मिट्टी पर कोई पानी का कतरा फेंक गया हो  
धीरे धीरे आँगन में फिर धूप सिसकती रहती है  
कब आते हो, कब जाते हो  
बंद कमरे में कभी-कभी जब दीये की लोहि हिल जाती है तो  
एक बड़ा सा साया मुझको घूँट घूँट पीने लगता है  
आँखें मुझसे दूर बैठकर मुझको देखती रहती है  
कब आते हो कब जाते हो  
दिन में कितनी-कितनी बार मुझको - तुम याद आते हो

---

(1)

जब भी यह दिल उदास होता है  
जाने कौन आस-पास होता है

होंठ चुपचाप बोलते हों जब  
सांस कुछ तेज़-तेज़ चलती हो  
आँखें जब दे रही हों आवाजें  
ठंडी आहों में सांस जलती हो

आँख में तैरती हैं तसवीरें  
तेरा चेहरा तेरा ख्याल लिए  
आईना देखता है जब मुझको  
एक मासूम सा सवाल लिए

कोई वादा नहीं किया लेकिन  
क्यों तेरा इंतजार रहता है  
बेवजह जब करार मिल जाए  
दिल बड़ा बेकरार रहता है

जब भी यह दिल उदास होता है

जाने कौन आस-पास होता है

(2)

हाल-चाल ठीक-ठाक है

सब कुछ ठीक-ठाक है

बी.ए. किया है, एम.ए. किया

लगता है वह भी ऐंवे किया

काम नहीं है वरना यहाँ

आपकी दुआ से सब ठीक-ठाक है

आबो-हवा देश की बहुत साफ़ है

क्रायदा है, क्रानून है, इंसाफ़ है

अल्लाह-मियाँ जाने कोई जिए या मरे

आदमी को खून-वून सब माफ़ है

और क्या कहूँ?  
छोटी-मोटी चोरी, रिश्वतखोरी  
देती है अपा गुजारा यहाँ  
आपकी दुआ से बाकी ठीक-ठाक है

गोल-मोल रोटी का पहिया चला  
पीछे-पीछे चाँदी का रुपैया चला  
रोटी को बेचारी को चील ले गई  
चाँदी ले के मुँह काला कौवा चला

और क्या कहूँ?  
मौत का तमाशा, चला है बेतहाशा  
जीने की फुरसत नहीं है यहाँ  
आपकी दुआ से बाकी ठीक-ठाक है  
हाल-चाल ठीक-ठाक है

(3)

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई

मास्टर जी की आ गई चिट्ठी

चिट्ठी में से निकली बिल्ली

बिल्ली खाए जर्दा-पान

काला चश्मा पीले कान

कान में झुमका, नाक में बत्ती

हाथ में जलती अगरबत्ती

अगर हो बत्ती कछुआ छाप

आग में बैठा पानी ताप

ताप चढ़े तो कम्बल तान

वी.आई.पी. अंडरवियर-बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई

मास्टर जी की आ गई चिट्ठी  
चिट्ठी में से निकला मच्छर  
मच्छर की दो लंबी मूँछें  
मूँछ पे बाँधे दो-दो पत्थर  
पत्थर पे इक आम का झाड़  
पूँछ पे लेके चले पहाड़  
पहाड़ पे बैठा बूढ़ा जोगी  
जोगी की इक जोगन होगी  
-गठरी में लागा चोर  
मुसाफिर देख चाँद की ओर  
  
पहाड़ पे बैठा बूढ़ा जोगी  
जोगी की एक जोगन होगी  
जोगन कूटे कच्चा धान  
वी.आई.पी. अंडरवियर बनियान

अ-आ, इ-ई, अ-आ, इ-ई  
मास्टर जी की आ गई चिट्ठी  
चिट्ठी में से निकला चीता  
थोड़ा काला थोड़ा पीला  
चीता निकला है शर्मीला  
घूँघट डालके चलता है  
मांग में सेंदुर भरता है  
माथे रोज लगाए बिंदी  
इंग्लिश बोले मतलब हिंदी  
'इफ' अगर 'इज' है, 'बट' पर  
'हॉट' माने क्या  
इंग्लिश में अलजेब्रा छान  
वी. आई. पी. अंडरवियर-बनियान

---

काली काली आँखों का  
काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आज भी जुनूनी सी

जो एक आरजू है

यूँ ही तरसने दे

यह आँखें बरसने दे

तेरी आँखें दो आँखें

कभी शबनम कभी खुशबू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है

आधा आधा तुझ बिन मैं

आधी आधी सी तू है

## [काली काली आँखों काला काला जादू]

गहरे समंदर और दो ज़ज़ीरे  
झूबे हुए हैं कितने ज़खीरे  
द्वृढ़ने दो अश्कों के मोती  
सीपी से खोलो  
पलकों से झांके तो झाँकने दो  
कतरा कतरा गिनने दो  
कतरा कतरा चुनने दो  
कतरा कतरा रखना है ना  
कतरा कतरा रखने दो  
तेरी आँखों का यह साया  
अँधेरे में कोई जुगनू है

काली काली आँखों का

काला काला जादू है  
आधा आधा तुझ बिन मैं  
आधी आधी सी रु है

जाने कहाँ पे बदलेंगे दोनों  
उड़ते हुए यह शब के परिंदे  
पलकों पे बैठा ले के उड़े हैं  
दो बूँद दे दो प्यासे पड़े हैं  
हाँ दो बूँदें  
लम्हा लम्हा लम्हे दो  
लम्हा लम्हा जीने दो  
कह भी दो ना आँखों से  
लम्हा लम्हा पीने दो  
तेरी आँखें हल्का सा  
छलका सा एक आंसू है

काली काली आँखों का  
काला काला जादू है  
आधा आधा तुझ बिन मैं  
आधी आधी सी तू है

काली काली आँखों का  
काला काला जादू है

---

रोको मत टोको मत  
सोचने दो इन्हें सोचने दो  
रोको मत टोको मत  
होए टोको मत इन्हें सोचने दो

मुश्किलों के हल खोजने दो  
रोको मत टोको मत  
निकलने तो दो आसमां से जुड़ेंगे

## अरे अंडे के अन्दर ही कैसे उड़ेंगे यार

निकालने दो पाँव जुराबें बहुत हैं

किताबों के बाहर किताबें बहुत हैं

---

एक देहाती सर पे गुड़ की भेली बांधे,

लम्बे- चौडे एक मैदा से गुज़र रहा था

गुड़ की खुशबु सुनके भिन-भिन करती

एक छतरी सर पे मंडलाती थी

धूप चढ़ती और सूरज की गर्मी पहुची तो

गुड़ की भेली बहने लगी

मासूम देहाती हैरा था

माथे से मीठे-मीठे कतरे गिरते थे

और वो जीभ से चाट रहा था!

मैं देहाती.....

मेरे सर पर ये टैगोर की कविता की भेली किसने रख दी!

---

बस एक चुप सी लगी है, नहीं उदास नहीं!

कहीं पे सांस रुकी है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

कोई अनोखी नहीं, ऐसी ज़िन्दगी लेकिन!

खूब न हो, मिली जो खूब मिली है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

सहर भी ये रात भी, दोपहर भी मिली लेकिन!

हमीने शाम चुनी, हमीने शाम चुनी है!

नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

वो दासतां जो, हमने कही भी, हमने लिखी!

आज वो खुद से सुनी है!  
नहीं उदास नहीं, बस एक चुप सी लगी है!!

---

चौदहवीं रात के इस चाँद तले  
सुरमई रात में साहिल के करीब  
दूधिया जोड़े में आ जाए जो तू  
ईसा के हाथ से गिर जाए सलीब  
बुद्ध का ध्यान चटख जाए, कसम से  
तुझ को बदरित न कर पाए खुदा भी

दूधिया जोड़े में आ जाए जो तू  
चौदहवीं रात के इस चाँद तले !

---

सितारे लटके हुए हैं तागों से आस्माँ पर  
चमकती चिंगारियाँ-सी चकरा रहीं आँखों की पुतलियों में  
नज़र पे चिपके हुए हैं कुछ चिकने-चिकने से रोशनी के धब्बे

जो पलकें मूँदूँ तो चुभने लगती हैं रोशनी की सफेद किरचें  
मुझे मेरे मखमली अँधेरों की गोद में डाल दो उठाकर  
चटकती आँखों पे घुप्प अँधेरों के फाए रख दो  
यह रोशनी का उबलता लावा न अन्धा कर दे ।

---

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैंने,  
पूरे का पूरा आकाश घुमा कर बाज़ी देखी मैंने

काले घर में सूरज चलके, तुमने शायद सोचा था  
मेरे सब मोहरे पिट जायेंगे.  
मैंने एक चराग जलाकर रोशनी कर ली,  
अपना रस्ता खोल लिया

तुमने एक समन्दर हाथ में लेकर मुझपे ढेल दिया,  
मैंने नोह की कश्ति उस के ऊपर रख दी

गुलज़ार

काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा,  
काल चला तुमने और मेरी जानिब देखा  
मैंने काल को तोड़कर,  
लम्हा लम्हा जीना सीख लिया

मेरी खुदी को मारना चाहा  
तुमने चन्द चमत्कारों से  
मेरी खुदी को मारना चाहा तुमने  
चन्द चमत्कारों से  
और मेरे एक प्यादे ने चलते चलते  
तेरा चांद का मोहरा मार लिया

मौत की शह देकर तुमने समझा था अब  
तो मात हुई  
मौत की शह देकर तुमने समझा था अब  
तो मात हुई

मैंने जिस्म का खोल उतारकर सौंप

दिया,

और रुह बचा ली

पूरे का पूरा आकाश घुमा कर अब

तुम देखो बाज़ी...

---

जिंदगी यूँ हुई बसर तन्हा

क्राफिला साथ और सफर तन्हा

अपने साये से चौंक जाते हैं

उम्र गुज़री है इस कदर तन्हा

रात भर बोलते हैं सन्नाटे

रात काटे कोई किधर तन्हा

दिन गुज़रता नहीं है लोगों में

रात होती नहीं बसर तन्हा

हमने दरवाजे तक तो देखा था

फिर न जाने गए किधर तन्हा

=====

खुमानी, अखरोट बहुत दिन पास रहे थे

दोनों के जब अक्स पड़ा करते थे बहते दरिया में,

पेड़ों की पोशाकें छोड़के,

नंग-धड़ंग दोनों दिन भर पानी में तैरा करते थे

कभी-कभी तो पार का छोर भी हूँ आते थे

खुमानी मोटी थी और अखरोट का कद कुछ ऊँचा था

भँवर कोई पीछे पड़ जाए, तो पत्थर की आड़ से होकर,

अखरोट का हाथ पकड़ के वापस भाग आती थी।

अखरोट बहुत समझाता था,  
"देख खुमानी, भँवर के चक्कर में मत पड़ना,  
पाँव तले की मिट्टी खेंच लिया करता है।"

इक शाम बहुत पानी आया तुऱ्यानी का,  
और एक भँवर...  
खुमानी को पाँव से उठाकर, तुऱ्यानी में कूद गया।  
अखरोट अब भी उस जानिब देखा करता है,  
जिस जानिब दरिया बहता है।

अखरोट का क्रद कुछ सहम गया है  
उसका अक्स नहीं पड़ता अब पानी में।

=====

खिड़की पिछवाड़े को खुलती तो नज़र आता था  
वो अमलतास का इक पेड़, ज़रा दूर, अकेला-सा खड़ा था  
शाखें पंखों की तरह खोले हुए  
एक परिन्दे की तरह

बरगलाते थे उसे रोज़ परिन्दे आकर  
सब सुनाते थे वि परवाज़ के किस्से उसको  
और दिखाते थे उसे उड़ के, क़लाबाज़ियाँ खा के  
बदलियाँ छू के बताते थे, म़ज़े ठंडी हवा के!

आंधी का हाथ पकड़ कर शायद  
उसने कल उड़ने की कोशिश की थी  
औंधे मुँह बीच-सड़क आके गिरा है!!

मोड़ पे देखा है वो बूढ़ा-सा इक आम का पेड़ कभी?  
मेरा वाकिफ है बहुत सालों से, मैं जानता हूँ

जब मैं छोटा था तो इक आम चुराने के लिए  
परली दीवार से कंधों पे चढ़ा था उसके  
जाने दुखती हुई किस शाख से मेरा पाँव लगा  
धाड़ से फेंक दिया था मुझे नीचे उसने

मैंने खुन्नस में बहुत फेंके थे पत्थर उस पर  
मेरी शादी पे मुझे याद है शाखें देकर  
मेरी वेदी का हवन गरम किया था उसने  
और जब हामला थी बीबा, तो दोपहर में हर दिन  
मेरी बीबी की तरफ कैरियाँ फेंकी थी उसी ने

वक्त के साथ सभी फूल, सभी पत्ते गए

तब भी लजाता था जब मुन्ने से कहती बीबा  
'हाँ उसी पेड़ से आया है तू पेड़ का फल है।'

अब भी लजाता हूँ जब मोड़ से गुज़रता हूँ  
खाँस कर कहता है, "क्यूँ सर के सभी बाल गए?"

सुबह से काट रहे हैं वो कमटी वाले  
मोड़ तक जाने की हिम्मत नहीं होती मुझको!

=====

कभी कभी लैम्प पोस्ट के नीचे कोई लड़का

दबा के पैन्सिल को उंगलियों में

मुड़े-तुड़े काग़जों को घुटनों पे रख के

लिखता हुआ नज़र आता है कहीं तो..

ख्याल होता है, गोर्की है!

पजामे उचके ये लड़के जिनके घरों में बिजली नहीं लगी है

जो म्यूनिसपैल्टी के पार्क में बैठ कर पढ़ा करते हैं किताबें

डिकेन्स के और हार्डी के नॉवेल से गिर पड़े हैं..

या प्रेमचन्द की कहानियों का वर्क है कोई, चिपक गया है

समय पलटता नहीं वहां से

कहानी आगे बढ़ती नहीं है... और कहानी रुकी हुई है।

ये गर्भियाँ कितनी फीकी होती हैं - बेस्वादी।

हथेली पे लेके दिन की फक्की

मैं फाँक लेता हूं... और निगलता हूं रात के ठन्डे धूंट पीकर

गुलज़ार

ये सूखा सत्तू हलक से नीचे नहीं उतरता

ये खुश्क दिन एक गर्मियों का  
जस भरी रात गर्मियों की

कोई मेला लगा है परबत पर

सब्ज़ाज़ारों पर चढ़ रहे हैं लोग

टोलियाँ कुछ लकी हुई ढलानों पर

दाग लगते हैं इक पके फल पर

दूर सीवन उधेड़ती-चढ़ती,

एक पगड़ंडी बढ़ रही है सब्जे पर !

चूंटियाँ लग गई हैं इस पहाड़ी को  
जैसे अमर्नद सड़ रहा है कोई!

=====

दूर सुनसान-से साहिल के क्रीब

एक जवाँ पेड़ के पास

उम्र के दर्द लिए वक्त मटियाला दोशाला ओढ़े

बूढ़ा-सा पाम का इक पेड़, खड़ा है कब से

सैकड़ों सालों की तन्हाई के बद

झुक के कहता है जवाँ पेड़ से... 'यार!

तन्हाई है ! कुछ बात करो !'

=====

वो जो शायर था चुप-सा रहता था  
बहकी-बहकी-सी बातें करता था  
आँखें कानों पे रख के सुनता था  
गूँगी खामोशियों की आवाजें !

जमा करता था चाँद के साए  
और गीली- सी नूर की बूँदें  
रुखे-रुखे- से रात के पत्ते  
ओक में भर के खरखराता था

वक्त के इस धनेरे जंगल में  
कच्चे-पक्के से लम्हे चुनता था  
हाँ वही, वो अजीब- सा शायर

रात को उठ के कोहनियों के बल

चाँद की ठोड़ी चूमा करता था

चाँद से गिर के मर गया है वो

लोग कहते हैं खुदकुशी की है।

=====

रात भर सर्द हवा चलती रही

रात भर हमने अलाव तापा

मैंने माजी से कई खुशक सी शाखें काटीं

तुमने भी गुजरे हुये लम्हों के पत्ते तोड़े

मैंने जेबों से निकालीं सभी सूखीं नज़में

तुमने भी हाथों से मुरझाये हुये खत खोलें

अपनी इन आंखों से मैंने कई मांजे तोड़े

और हाथों से कई बासी लकीरें फेंकी

तुमने पलकों पे नामी सूख गयी थी, सो गिरा दी।

रात भर जो भी मिला उगते बदन पर हमको  
काट के दाल दिया जलाते अलावों मसं उसे  
रात भर फून्कों से हर लोऊ को जगाये रखा  
और दो जिस्मों के ईंधन को जलाए रखा  
रात भर बुझते हुए रिश्ते को तापा हमने ।

=====

खुशबू जैसे लोग मिले अफसाने में  
एक पुराना खत खोला अनजाने में  
जाना किसका जिक्र है इस अफसाने में  
दर्द मज़े लेता है जो दुहराने में

शाम के साये बालिस्तों से नापे हैं  
चाँद ने कितनी देर लगा दी आने में

रात गुज़रते शायद थोड़ा वक्त लगे  
ज़रा सी धूप दे उन्हें मेरे पैमाने में

दिल पर दस्तक देने ये कौन आया है

किसकी आहट सुनता है वीराने मे ।

=====

मौत तू एक कविता है

मुझसे एक कविता का वादा है मिलेगी मुझको

दूबती नब्जों में जब दर्द को नींद आने लगे  
ज़र्द सा चेहरा लिये जब चांद उफक तक पहुँचे  
दिन अभी पानी में हो, रात किनारे के करीब  
ना अंधेरा ना उजाला हो, ना अभी रात ना दिन

जिस्म जब खत्म हो और रुह को जब साँस आए  
मुझसे एक कविता का वादा है मिलेगी मुझको

=====

चिपचिपे दूध से नहलाते हैं, आंगन में खड़ा कर के तुम्हें

शहद भी, तेल भी, हल्दी भी, ना जाने क्या क्या  
घोल के सर पे लुढ़काते हैं गिलासियाँ भर के  
औरतें गाती हैं जब तीव्र सुराँ में मिल कर  
पाँव पर पाँव लगाए खड़े रहते हो  
इक पथराई सी मुस्कान लिए  
बुत नहीं हो तो परेशानी तो होती होगी

जब धुआँ देता, लगातार पुजारी  
धी जलाता है कई तरह के छोंके देकर  
इक जरा छींक ही दी तुम  
तो यकीं आए कि सब देख रहे हो

=====

वो खत के पुरजे उड़ा रहा था  
हवाओं का रुख दिखा रहा था

कुछ और भी हो गया नुमायाँ

मैं अपना लिखा मिटा रहा था

उसी का इमान बदल गया है  
कभी जो मेरा खुदा रहा था

वो एक दिन एक अजनबी को  
मेरी कहानी सुना रहा था

वो उम्र कम कर रहा था मेरी  
मैं साल अपने बढ़ा रहा था

=====

कुरान हाथों में लेके नाबीना एक नमाझी  
लबों पे रखता था  
दोनों आँखों से चूमता था  
झुकाके पेशानी यूँ अक्रीदत से हूँ रहा था  
जो आयतें पढ़ नहीं सका

गुलज़ार

उन के लम्स महसूस कर रहा हो

मैं हैराँ-हैराँ गुज़र गया था  
मैं हैराँ हैराँ ठहर गया हूँ

तुम्हारे हाथों को चूम कर  
छू के अपनी आँखों से आज मैं ने  
जो आयतें पढ़ नहीं सका  
उन के लम्स महसूस कर लिये हैं

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं  
कहीं पे साँस लकी है, नहीं उदास नहीं

कोई अनोखी नहीं ऐसी ज़िंदगी लेकिन  
मिली जो, खूब मिली है, नहीं उदास नहीं

सहर भी, रात भी, दोपहर भी मिली लेकिन  
हमीं ने शाम चुनी है, नहीं उदास नहीं

बस एक चुप-सी लगी है, नहीं उदास नहीं  
कहीं पे साँस रुकी है, नहीं उदास नहीं।

=====

शाम से आँख में नमी सी है  
आज फिर आप की कमी सी है

दफ्न कर दो हमें कि साँस मिले  
नब्ज़ कुछ देर से थमी सी है

वक्त रहता नहीं कहीं थमकर

इस की आदत भी आदमी सी है

कोई रिश्ता नहीं रहा फिर भी  
एक तस्लीम लाज़मी सी है

=====

साँस लेना भी कैसी आदत है  
जीये जाना भी क्या रवायत है  
कोई आहट नहीं बदन में कहीं  
कोई साया नहीं है आँखों में  
पाँव बेहिस हैं, चलते जाते हैं  
इक सफर है जो बहता रहता है  
कितने बरसों से, कितनी सदियों से  
जिये जाते हैं, जिये जाते हैं  
आदतें भी अजीब होती हैं

=====

क्रदम उसी मोड़ पर जमे हैं  
नज़र समेटे हुए खड़ा हूँ  
जुनूँ ये मजबूर कर रहा है पलट के देखूँ  
.खुदी ये कहती है मोड़ मुड़ जा  
अगरचे एहसास कह रहा है  
खुले दरीचे के पीछे दो आँखें झाँकती हैं  
अभी मेरे इंतज़ार में वो भी जागती है  
कहीं तो उस के गोशा-ए-दिल में दर्द होगा  
उसे ये ज़िद है कि मैं पुकारूँ  
मुझे तक़ाज़ा है वो बुला ले  
क्रदम उसी मोड़ पर जमे हैं  
नज़र समेटे हुए खड़ा हूँ

=====

नज़म उलझी हुई है सीने में  
मिसरे अटके हुए हैं होठों पर

उड़ते-फिरते हैं तितलियों की तरह

लफ्ज़ काग़ज़ पे बैठते ही नहीं

कब से बैठा हुआ हूँ मैं जानम

सादे काग़ज़ पे लिखके नाम तेरा

बस तेरा नाम ही मुकम्मल है

इससे बहतर भी नज़म क्या होगी

=====

मैं अपने घर में ही अजनबी हो गया हूँ आ कर

मुझे यहाँ देखकर मेरी रुह डर गई है

सहम के सब आरजुएँ कोनों में जा छुपी हैं

लवें बुझा दी हैं अपने चेहरों की, हसरतों ने

कि शौक पहचनता ही नहीं

मुरादें दहलीज़ ही पे सर रख के मर गई हैं

मैं किस वतन की तलाश में यूँ चला था घर से

कि अपने घर में भी अजनबी हो गया हूँ आ कर

=====

हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं छोड़ा करते

वक्त की शाख से लम्हे नहीं तोड़ा करते

जिस की आवाज में सिलवट हो निगाहों में शिकन

ऐसी तस्वीर के टुकड़े नहीं जोड़ा करते

शहद जीने का मिला करता है थोड़ा थोड़ा

जाने वालों के लिये दिल नहीं थोड़ा करते

लग के साहिल से जो बहता है उसे बहने दो

ऐसी दरिया का कभी रुख नहीं मोड़ा करते

=====

एक पुराना मौसम लौटा याद भरी पुरवाई भी

ऐसा तो कम ही होता है वो भी हों तनहाई भी

यादों की बौछारों से जब पलकें भीगने लगती हैं  
कितनी सौंधी लगती है तब माझी की रुसवाई भी

दो दो शक्लें दिखती हैं इस बहके से आईने में  
मेरे साथ चला आया है आपका इक सौदाई भी

खामोशी का हासिल भी इक लम्बी सी खामोशी है  
उन की बात सुनी भी हमने अपनी बात सुनाई भी

=====

एक परवाज़ दिखाई दी है  
तेरी आवाज़ सुनाई दी है

जिस की आँखों में कटी थी सदियाँ  
उस ने सदियों की जुदाई दी है

गुलज़ार

सिर्फ एक सफाह पलट कर उस ने  
बीती बातों की सफाई दी है

फिर वहीं लौट के जाना होगा  
यार ने कैसी रिहाई दी है

आग ने क्या क्या जलाया है शब भर  
कितनी खुश-रंग दिखाई दी है

=====

दिन कुछ ऐसे गुज़ारता है कोई  
जैसे एहसान उतारता है कोई

आईना देख के तसल्ली हुई  
हम को इस घर में जानता है कोई  
पक गया है शज़र पे फल शायद  
फिर से पत्थर उछालता है कोई

फिर नज़र में लहू के छींटे हैं  
तुम को शायद मुग्गालता है कोई

देर से गूँजते हैं सन्नाटे  
जैसे हम को पुकारता है कोई

=====

चलो ना भटके  
लफ़ंगे कूचों में  
लुच्ची गलियों के  
चौक देखें  
सुना है वो लोग  
चूस कर जिन को वक्त ने  
रास्ते में फेंका थ  
सब यहीं आके बस गये हैं  
ये छिलके हैं ज़िन्दगी के

इन का अर्क निकालो

कि ज़हर इन का

तुम्हरे जिस्मों में

ज़हर पलते हैं

और जितने वो मार देगा

चलो ना भटके

लफ़ंगे कूचों में

=====

आँखों में जल रहा है क्यूँ बुझता नहीं धुआँ

उठता तो है घटा-सा बरसता नहीं धुआँ

चूल्हे नहीं जलाये या बस्ती ही जल गई

कुछ रोज़ हो गये हैं अब उठता नहीं धुआँ

आँखों के पोंछने से लगा आँच का पता

यूँ चेहरा फेर लेने से छुपता नहीं धुआँ

आँखों से आँसुओं के मरासिम पुराने हैं  
मेहमाँ ये घर में आयें तो चुभता नहीं धुआँ

=====

आदतन तुम ने कर दिये वादे  
आदतन हम ने ऐतबार किया

तेरी राहों में हर बार लुक कर  
हम ने अपना ही इन्तज़ार किया

अब ना माँगेंगे जिन्दगी या रब  
ये गुनाह हम ने एक बार किया

=====

आओ फिर नज़म कहें  
फिर किसी दर्द को सहलाकर सुजा ले आँखें  
फिर किसी दुखती हुई रग में छुपा दें नश्तर

या किसी भूली हुई राह पे मुड़कर एक बार  
नाम लेकर किसी हमनाम को आवाज़ ही दें लें  
फिर कोई नज़म कहें

=====

आओ तुमको उठा लूँ कंधों पर  
तुम उचककर शरीर होठों से चूम लेना  
चूम लेना ये चाँद का माथा

आज की रात देखा ना तुमने  
कैसे झुक-झुक के कोहनियों के बल  
चाँद इतना करीब आया है

=====

सांस लेना भी कैसी आदत है  
जिए जाना भी क्या रवायत है  
कोई आहट नहीं बदन में कहीं  
कोई साया नहीं है आँखों में

पावँ बैहिस हैं चलते जाते हैं  
इक सफर है जो बहता रहता है  
कितने बरसों से कितनी सदियों से  
जिए जाते हैं जिए जाते हैं

आदतें भी अजीब होती हैं

=====

देखो आहिस्ता चलो, और भी आहिस्ता ज़रा

देखना, सोच-समझकर ज़रा पाँव रखना  
जोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं  
कांच के ख्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में  
ख्वाब टूटे न कोई, जाग न जायें देखो  
जाग जायेगा कोई ख्वाब तो मर जायेगा

=====

आओ, सारे पहन लें आईने  
सारे देखेंगे अपना ही चेहरा

**रुह ? अपनी भी किसने देखी है!**

---

**क्या पता कब, कहाँ से मारेगी  
बस कि मैं ज़िन्दगी से डरता हूँ**

**मौत का क्या है, एक बार मारेगी**

---

**उठते हुए जाते हुए पंछी ने बस इतना ही देखा  
देर तक हाथ हिलाती रही वो शाख फ़िज़ा में**

**अलविदा कहने को, या पास बुलाने के लिए?**

---

गुलज़ार

सब पे आती है सब की बारी से  
मौत मुंसिफ़ है कम-ओ-बेश नहीं

---

ज़िन्दगी सब पे क्यूँ नहीं आती

कौन खायेगा किसका हिस्सा है  
दाने-दाने पे नाम लिखा है

'सेठ सूदचंद मूलचंद आका'

---

उफ़! ये भीगा हुआ अखबार  
पेपर वाले को कल से चेंज करो

'पांच सौ गाँव बह गए इस साल'

नीले-नीले से शब के गुम्बद में  
तानपुरा मिला रहा है कोई

एक शफ्फाफ काँच का दरिया  
जब खनक जाता है किनारों से  
देर तक गूँजता है कानों में

पलकें झपका के देखती हैं शमएं  
और फ़ानूस गुनगुनाते हैं  
मैंने मुन्द्रों की तरह कानों में  
तेरी आवाज़ पहन रखवी है

चौक से चलकर, मंडी से, बाज़ार से होकर  
लाल गली से गुज़री है काग़ज की कश्ती  
बारिश के लावारिस पानी पर बैठी बेचारी कश्ती

गुलज़ार

शहर की आवारा गलियों से सहमी-सहमी पूछ रही हैं  
हर कश्ती का साहिल होता है तो-  
मेरा भी क्या साहिल होगा?

एक मासूम-से बच्चे ने  
बेमानी को मानी देकर  
रद्दी के काग़ज पर कैसा जुल्म किया है

=====

ठंडी साँसे ना पालो सीने में  
लम्बी सांसों में सांप रहते हैं  
ऐसे ही एक सांस ने इक बार  
डस लिया था हसी क्लियोपेत्रा को

मेरे होटों पे अपने लब रखकर  
फूँक दो सारी साँसों को 'बीबा'

## मुझको आदत है ज़हर पीने की

रात में देखो झील का चेहरा  
किस कदर पाक, पुरुकुं, गमगीं  
कोई साया नहीं है पानी पर  
कोई सिलवट नहीं है आँखों में  
नीन्द आ जाये दर्द को जैसे  
जैसे मरियम उडाद बैठी हो

जैसे चेहरा हटाके चेहरे का  
सिर्फ एहसास रख दिया हो वहाँ

ख्याल, सांस नज़र, सौच खोलकर दे दो  
लबों से बोल उतारो, जुबां से आवाजें  
हथेलियों से लकीरें उतारकर दे दो  
हाँ, दे दो अपनी 'खुदी' भी की 'खुद' नहीं हो तुम

उतारों रूह से ये जिस्म का हसीं गहना  
उठो दुआ से तो 'आमीन' कहके रूह दे दो

=====

खाली डिब्बा है फ़क़त, खोला हुआ चीरा हुआ  
यूँ ही दीवारों से भिड़ता हुआ, टकराता हुआ  
बेवजह सड़कों पे बिखरा हुआ, फैलाया हुआ  
ठोकरें खाता हुआ खाली लुढ़कता डिब्बा

यूँ भी होता है कोई खाली-सा- बेकार-सा दिन  
ऐसा बेरंग-सा बेमानी-सा बेनाम-सा दिन  
खाली डिब्बा है फ़क़त, खोला हुआ चीरा हुआ  
यूँ ही दीवारों से भिड़ता हुआ, टकराता हुआ  
बेवजह सड़कों पे बिखरा हुआ, फैलाया हुआ  
ठोकरें खाता हुआ खाली लुढ़कता डिब्बा

यूँ भी होता है कोई खाली-सा- बेकार-सा दिन

## ऐसा बेरंग-सा बेमानी-सा बेनाम-सा दिन

=====

कंधे झुक जाते हैं जब बोझ से इस लम्बे सफर के  
हाँफ जाता हूँ मैं जब चढ़ते हुए तेज चढ़ाने  
सांसे रह जाती है जब सीने में एक गुच्छा हो कर  
और लगता है दम टूट जायेगा यहीं पर

एक नन्ही सी नज़्म मेरे सामने आ कर  
मुझ से कहती है मेरा हाथ पकड़ कर-मेरे शायर  
ला, मेरे कन्धों पे रख दे,  
मैं तेरा बोझ उठा लूँ

=====

दिल में ऐसे ठहर गए हैं गम  
जैसे जंगल में शाम के साये

जाते-जाते सहम के लक जाएँ

मुडके देखे उदास राहों पर

कैसे बुझते हुए उजालों में

दूर तक धूल ही धूल उडती है

=====

छोटे थे, माँ उपले थापा करती थी

हम उपलों पर शक्लों गूँधा करते थे

आँख लगाकर - कान बनाकर

नाक सजाकर -

पगड़ी वाला, टोपी वाला

मेरा उपला -

तेरा उपला -

अपने-अपने जाने-पहचाने नामों से

उपले थापा करते थे

हँसता-खेलता सूरज रोज़ सवेरे आकर

गोबर के उपलों पे खेला करता था  
रात को आँगन में जब चूल्हा जलता था  
हम सारे चूल्हा घेर के बैठे रहते थे  
किस उपले की बारी आयी  
किसका उपला राख हुआ  
वो पंडित था -  
इक मुन्ना था -  
इक दशरथ था -  
बरसों बाद - मैं  
श्मशान में बैठा सोच रहा हूँ  
आज की रात इस वक्त के जलते चूल्हे में  
इक दोस्त का उपला और गया !

=====

आज फिर चाँद की पेशानी से उठता है धुआँ  
आज फिर महकी हुई रात में जलना होगा  
आज फिर सीने में उलझी हुई क़ज़नी साँसें

फट के बस टूट ही जाएँगी, बिखर जाएँगी  
आज फिर जागते गुज़रेगी तेरे ख्वाब में रात  
आज फिर चाँद की पेशानी से उठता धुआँ

=====

आदमी बुलबुला है पानी का  
और पानी की बहती सतह पर टूटता भी है, छबता भी है,  
फिर उभरता है, फिर से बहता है,  
न समंदर निगला सका इसको, न तवारीख तोड़ पाई है,  
वक्त की मौज पर सदा बहता आदमी बुलबुला है पानी का।

=====

चार तिनके उठा के जंगल से  
एक बाली अनाज की लेकर  
चंद कतरे बिलखते अश्कों के  
चंद फांके बुझे हुए लब पर  
मुट्ठी भर अपने कब्र की मिट्टी  
मुट्ठी भर आरजुओं का गारा

एक तामीर की लिए हसरत

तेरा खानाबदोश बेचारा

शहर में दर-ब-दर भटकता है

तेरा कांधा मिले तो टेकूं!

=====

गोल फूला हुआ गुब्बारा थक कर

एक नुकीली पहाड़ी यूँ जाके टिका है

जैसे ऊँगली पे मदारी ने उठा रखा हो गोला

फूँक से ठेलो तो पानी में उतर जाएगा

भक से फट जाएगा फूला हुआ सूरज का गुब्बारा

छन-से बुझ जाएगा इक और दहकता हुआ दिन

=====

बस्ता फेंक के लोची भागा रोशनआरा बागा की जानिब

चिल्लाता : 'चल गुड़ी चल'

पकके जामुन टपकेंगे'

आँगन की रस्सी से माँ ने कपड़े खोले  
और तंदूर पे लाके टीन की चादर डाली

सारे दिन के सूखे पापड़  
लच्छी ने लिपटा ई चादर  
'बच गई रब्बा' किया कराया धुल जाना था'

खैरु ने अपने खेतों की सूखी मिट्टी  
झुरियों वाले हाथ में ले कर  
भीगी-भीगी आँखों से फिर ऊपर देखा

झूम के फिर उट्टे हैं बादल  
टूट के फिर मेंहं बरसेगा

=====

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो कि दास्ताँ आगे और भी है

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो  
अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं  
अभी तो किरदार ही बुझे है,  
अभी सुलगते हैं रूह के ग्राम  
अभी धड़कतें हैं दर्द दिल के  
अभी तो एहसास जी रहा है

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है  
यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगुला बन कर  
यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को ले कर  
कहीं तो अंजाम-ए-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो कि दास्ताँ आगे और भी है  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो  
अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं  
अभी तो किरदार ही बुझे है,

अभी सुलगते हैं रुह के ग्राम  
अभी धड़कतें हैं दर्द दिल के  
अभी तो एहसास जी रहा है

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है  
यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगुला बन कर  
यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को ले कर  
कहीं तो अंजाम-ए-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो

=====

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ  
कुचलता हुआ धास की कलगियाँ  
गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की, छुपता हुआ  
जिनके पीछे से  
निकला चला जा रहा था वह सूरज  
त'आकुब मैं था उसके मैं

गिरफ्तार करने गया था उसे  
जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

=====

रात भर सर्द हवा चलती रही

रात भर हमने

अलाव तापा

मैंने माझी से कई खुशक सी शाखें काटीं  
तुमने भी गुज़रे हुए लम्हों के पत्ते तोड़े  
मैंने जेबों से निकालीं सभी सूखी नज़रें  
तुमने भी हाथों से मुरझाए हुए खत खोले  
अपनी इन आँखों से मैंने कई मांजे तोड़े  
और हाथों से कई बासी लकीरें फेंकीं  
तुमने पलकों पे नमी सूख गई थी सो गिरा दी

रात भर जो मिला उगते बदन पर हमको  
काट के डाल दिया जलते अलाव में उसे  
रात भर फूंकों से हर लौ को जगाये रखा

और दो जिस्मों के ईंधन को जलाये रखा

रात भर बुझते हुए रिश्ते को तापा हमने

वो जो शायर था चुप सा रहता था

बहकी-बहकी सी बातें करता था

आँखें कानों पे रख के सुनता था

गूंगी खामोशियों की आवाजें

जमा करता था चाँद के साए

गीली-गीली सी नूर की बूंदें

ओक्र में भर के खड़खड़ाता था

रुखे-रुखे से रात के पत्ते

वक्त के इस धनेरे जंगल में

कच्चे-पक्के से लम्हे चुनता था

हाँ वही वो अजीब सा शायर

रात को उठ के कोहनियों के बल

चाँद की ठोड़ी चूमा करता था

गुलज़ार

चाँद से गिर के मर गया है वो

लोग कहते हैं खुदकुशी की है

=====

देखो, आहिस्ता चलो और भी आहिस्ता ज़रा

देखना, सोच सँभल कर ज़रा पाँव रखना

ज़ोर से बज न उठे पैरों की आवाज़ कहीं

कांच के ख्वाब हैं बिखरे हुए तन्हाई में

ख्वाब टूटे न कोई जाग न जाए देखो

जाग जाएगा कोई ख्वाब तो मर जाएगा

=====

मुझसे इक नज़म का वादा है,  
मिलेगी मुझको  
झूबती नब्ज़ों में,  
जब दर्द को नींद आने लगे  
ज़र्द सा चेहरा लिए चाँद,  
उफ़क़ पर पहुँचे  
दिन अभी पानी में हो,  
रात किनारे के करीब  
न अँधेरा, न उजाला हो,  
यह न रात, न दिन

ज़िस्म जब खत्म हो  
और रुह को जब सांस आए

मुझसे इक नज़म का वादा है मिलेगी मुझको

=====

शहदूत की शाख पे बैठा कोई  
बुनता है रेशम के तागे  
लम्हा-लम्हा खोल रहा है  
पत्ता-पत्ता बीन रहा है  
एक-एक सांस बजा कर सुनता है सौदाई  
एक-एक सांस को खोल के अपने तन पर लिपटाता जाता है  
अपनी ही साँसों का क्रैंडी  
रेशम का यह शायर इक दिन  
अपने ही तागों में घुट कर मर जाएगा

=====

न जाने क्या था, जो कहना था  
आज मिल के तुझे  
तुझे मिला था मगर, जाने क्या कहा मैंने

वो एक बात जो सोची थी तुझसे कह दूँगा  
तुझे मिला तो लगा, वो भी कह चुका हूँ कभी

जाने क्या, ना जाने क्या था  
जो कहना था आज मिल के तुझे

कुछ ऐसी बातें जो तुझसे कही नहीं हैं मगर  
कुछ ऐसा लगता है तुझसे कभी कही होंगी  
तेरे ख्याल से गाफिल नहीं हूँ तेरी क़सम  
तेरे ख्यालों में कुछ भूल-भूल जाता हूँ  
जाने क्या, ना जाने क्या था जो कहना था  
आज मिल के तुझे जाने क्या...

=====

इन बूढ़े पहाड़ों पर, कुछ भी तो नहीं बदला  
सदियों से गिरी बँफें  
और उनपे बरसती हैं  
हर साल नई बँफें  
इन बूढ़े पहाड़ों पर...

गुलज़ार

घर लगते हैं कब्रों से  
खामोश सफेदी में  
कुतबे से दरख्तों के

ना आब था ना दारें  
अलगाज़ा की वादी में  
भेड़ों की गई जारें  
संवाद : कुछ वक्त नहीं गुज़रा नानी ने बताया था  
सरसब्ज ढलानों पर बस्ती गड़रियों की  
और भेड़ों की रेवड़ थे

गाना :

ऊँचे कोहसारों के  
गिरते हुए दामन में  
जंगल हैं चनारों के  
सब लाल से रहते हैं  
जब धूप चमकती है

कुछ और दहकते हैं  
हर साल चनारों में  
इक आग के लगने से  
मरते हैं हज़ारों में!  
इन बूढ़े पहाड़ों पर...

संवाद : चुपचाप अँधेरे में अक्सर उस जंगल में  
इक भेड़िया आता था  
ले जाता था रेवड़ से  
इक भेड़ उठा कर वो  
और सुबह को जंगल में  
बस खाल पड़ी मिलती।

गाना : हर साल उमड़ता है  
दरिया पे बारिश में  
इक दौरा-सा पड़ता है

सब तोड़ के गिराता है  
संगलाख चट्टानों से  
जा सर टकराता है

तारीख का कहना है  
रहना चट्टानों को  
दरियाओं को बहना है  
अब की तुऱ्यानी में  
कुछ डूब गए गाँव  
कुछ बह गए पानी में  
चढ़ती रही कुबनि  
अलगोज़ा की वादी में  
भेड़ों की गई जानें  
संवाद : फिर सारे गङ्गरियों ने  
उस भेड़िए को छूँढ़ा  
और मार के लौट आए

उस रात इक जश्ह हुआ  
अब सुबह को जंगल में  
दो और मिली खालें  
गाना : नानी की अगर माने  
तो भैड़िया ज़िन्दा है  
जाएँगी अभी जानें  
इन बूढ़े पहाड़ों पर कुछ भी तो नहीं बदला...

---

कितनी सदियों से छूँढ़ती होंगी  
तुमको ये चाँदनी की आव़जें

पूर्णमासी की रात जंगल में  
नीले शीशम के पेड़ के नीचे  
बैठकर तुम कभी सुनो जानम  
भीगी-भीगी उदास आवाजें  
नाम लेकर पुकारती है तुम्हें

## पूर्णमासी की रात जंगल में...

पूर्णमासी की रात जंगल में  
चाँद जब झील में उतरता है  
गुनगुनाती हुई हवा जानम  
पत्ते-पत्ते के कान में जाकर  
नाम ले ले के पूछती है तुम्हें

पूर्णमासी की रात जंगल में  
तुमको ये चाँदनी आवाजें  
कितनी सदियों से हूँडती होंगी

=====

प्यार कभी इकतरफा होता है; न होगा  
दो रुहों के मिलन की जुड़वां पैदाईश है ये  
प्यार अकेला नहीं जी सकता

जीता है तो दो लोगों में

मरता है तो दो मरते हैं

प्यार इक बहता दरिया है

झील नहीं कि जिसको किनारे बाँध के बैठे रहते हैं

सागर भी नहीं कि जिसका किनारा नहीं होता

बस दरिया है और बह जाता है.

दरिया जैसे चढ़ जाता है ढल जाता है

चढ़ना ढलना प्यार में वो सब होता है

पानी की आदत है उपर से नीचे की जानिब बहना

नीचे से फिर भाग के सूरत उपर उठना

बादल बन आकाश में बहना

कांपने लगता है जब तेज़ हवाएँ छेड़े

बूँद़-बूँद बरस जाता है.

प्यार एक ज़िस्म के साज़ पर बजती गूँज नहीं है  
न मन्दिर की आरती है न पूजा है  
प्यार नफा है न लालच है  
न कोई लाभ न हानि कोई  
प्यार हेलान है न एहसान है.

न कोई जंग की जीत है ये  
न ये हुनर है न ये इनाम है  
न रिवाज कोई न रीत है ये  
ये रहम नहीं ये दान नहीं  
न बीज नहीं कोई जो बेच सकें.

खुशबू है मगर ये खुशबू की पहचान नहीं  
दर्द, दिलासे, शक्र, विश्वास, जुनूं  
और होशी हवास के इक अहसास के कोख से पैदा हुआ  
इक रिश्ता है ये

यह सम्बन्ध है दुनियारों का,  
दुरमाओं का, पहचानों का  
पैदा होता है, बढ़ता है ये, बूढ़ा होता नहीं  
मिट्टी में पले इक दर्द की ठंडी धूप तले  
जड़ और तल की एक फसल  
कटती है मगर ये फटती नहीं.

मट्टी और पानी और हवा कुछ रौशनी  
और तारीकी को छोड़  
जब बीज की आँख में झांकते हैं  
तब पौधा गर्दन ऊँची करके  
मुंह नाक नज़र दिखलाता है.

पौधे के पत्ते-पत्ते पर  
कुछ प्रश्न भी हैं कुछ उत्तर भी  
किस मिट्टी की कोँख से हो तुम

किस मौसम ने पाला पोसा  
औं सूरज का छिड़काव किया.

किस सिम्त गयी साखें उसकी  
कुछ पत्तों के चेहरे उपर हैं  
आकाश के ज़ानिब तकते हैं  
कुछ लटके हुए ग़मगीन मगर  
शाखों के रगों से बहते हुए  
पानी से जुड़े मट्टी के तले  
एक बीज से आकर पूछते हैं:

हम तुम तो नहीं  
पर पूछना है तुम हमसे हो या हम तुमसे  
प्यार अगर वो बीज है तो  
इक प्रश्न भी है इक उत्तर भी.

=====

बोस्की ब्याहने का समय अब करीब आने लगा है  
जिस्म से छूट रहा है कुछ कुछ  
रुह में ढूब रहा है कुछ कुछ  
कुछ उदासी है, सुकूं भी  
सुबह का वक्त है पौ फटने का,  
या झुटपुटा शाम का है मालूम नहीं  
यूँ भी लगता है कि जो मोड़ भी अब आएगा  
वो किसी और तरफ़ मुड़ के चली जाएगी,  
उगते हुए सूरज की तरफ़  
और मैं सीधा ही कुछ दूर अकेला जा कर  
शाम के दूसरे सूरज में समा जाऊँगा !

---

नाराज़ है मुझसे बोस्की शायद  
जिस्म का एक अंग चुप चुप सा है  
सूजे से लगते हैं पांव

सौच में एक भंवर की आँख है

धूम धूम कर देख रही है

बोस्की, सूरज का टुकड़ा है

मेरे खून में रात और दिन घुलता रहता है

वह क्या जाने, जब वो रूठे

मेरी रगों में खून की गर्दिश मच्छम पड़ने लगती है.

---

मैं उड़ते हुए पंछियों को डराता हुआ

कुचलता हुआ धास की कलागियाँ

गिराता हुआ गर्दनें इन दरख्तों की, छुपता हुआ

जिनके पीछे से

निकला चला जा रहा था वह सूरज

तआकुब में था उसके मैं

गिरफ्तार करने गया था उसे

जो ले के मेरी उम्र का एक दिन भागता जा रहा था

~~~~~

वक्त की आँख पे पट्टी बांध के।  
चोर सिपाही खेल रहे थे—  
रात और दिन और चाँद और मैं—  
जाने कैसे इस गर्दिश में अटका पाँव,  
दूर गिरा जा कर मैं जैसे,  
रौशनियों के धक्के से  
परछाई जमीं पर गिरती है!  
धेया छोने से पहले ही—  
वक्त ने चोर कहा और आँखे खोल के  
मुझको पकड़ लिया—

~~~~~

तुम्हारी फुर्कत में जो गुजरता है,  
और फिर भी नहीं गुजरता,  
मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?  
कि वक्त बांगे जरस नहीं जो बता रहा है

कि दो बजे हैं,  
कलाई पर जिस अकाब को बांध कर  
समझता हूँ वक्त है,  
वह वहाँ नहीं है!  
  
वह उड़ चुका  
जैसे रंग उड़ता है मेरे चेहरे का, हर तहयुर पे,  
और दिखता नहीं किसी को,  
वह उड़ रहा है कि जैसे इस बेकराँ समंदर से  
भाप उड़ती है  
और दिखती नहीं कहीं भी,  
  
कदीम वजनी इमारतों में,  
कुछ ऐसे रखा है, जैसे कागज पे बट्टा रख दें,  
दबा दें, तारीख उड़ ना जाये,  
मैं वक्त कैसे बयाँ करूँ, वक्त और क्या है?  
कभी कभी वक्त यूँ भी लगता है मुझको

जैसे, गुलाम है!

आफताब का एक दहकता गोला उठा के  
हर रोज पीठ पर वह, फलक पर चढ़ता है चप्पा  
चप्पा कदम जमाकर,  
वह पूरा कोहसार पार कर के,  
उतारता है उफुक कि दहलीज़ पर दहकता  
हुआ सा पत्थर,  
टिका के पानी की पतली सुतली पे, लौट  
जाता है अगले दिन का उठाने गोला,  
और उसके जाते ही  
धीरे धीरे वह पूरा गोला निगल के बाहर निकलती है  
रात, अपनी पीली सी जीभ खोले,  
गुलाम है वक्त गर्दिशों का,  
कि जैसे उसका गुलाम मैं हूँ !!

~~~~~

उफुक फलांग के उमरा हुजूम लोगों का

कोई मीनारे से उतरा, कोई मुंडेरों से  
किसी ने सीढ़ियां लपकी, हटाई दीवारें—  
कोई अजाँसे उठा है, कोई जरस सुन कर!  
गुस्सीली आँखों में फुंकारते हवाले लिये,  
गली के मोड़ पे आकर हुए हैं जमा सभी!  
हर इक के हाथ में पत्थर हैं कुछ अकीदों के  
खुदा कि जात को संगसार करने आये हैं!!

~~~~~

मौजजा कोई भी उस शब ना हुआ—  
जितने भी लोग थे उस रोज इबादतगाह में,  
सब के होठों पर दुआ थी,  
और आँखों में चरागाँ था यकीं का  
ये खुदा का घर है,  
जलजले तोड़ नहीं सकते इसे, आग जला सकती नहीं!  
सैकड़ों मौजजों कि सब ने हिकायात सुनी थीं

सैकड़ों नामों से उन सब ने पुकारा उसको,  
गैब से कोई भी आवाज नहीं आई किसी की,  
ना खुदा कि – ना पुलिस कि !!

सब के सब भूने गए आग में और भस्म हुये.  
मौजजा कोई भी उस शब् ना हुआ!!

~~~~~

मौजजे होते हैं,- ये बात सुना करते थे!  
वक्त आने पे मगर–  
आग से फूल उगे, और ना जमीं से कोई दरिया  
**फूटा**  
ना समंदर से किसी मौज ने फेंका आँचल,  
ना फलक से कोई कश्ती उतरी!

आजमाइश की थी काल रात खुदाओं के लिये  
काल मेरे शहर में घर उनके जलाये सब ने!!

~~~~~  
अपनी मर्जी से तो मजहब भी नहीं उसने चुना था,  
उसका मजहब था जो माँ बाप से ही उसने  
विरासत में लिया था—

अपने माँ बाप चुने कोई ये मुमकिन ही कहाँ है  
मुल्क में मर्जी थी उसकी न वतन उसकी रजा से

वो तो कुल नौ ही बरस का था उसे क्यों चुनकर,  
फिकदाराना फसादात ने कल क्रत्ति किया—!!

~~~~~

आग का पेट बड़ा है!  
आग को चाहिए हर लहजा चबाने के लिये  
खुश्क करारे पत्ते,  
आग कर लेती है तिनकों पे गुजारा लेकिन—  
आशियानों को निगलती है निवालों की तरह,

आग को सब्ज हरी टहनियाँ अच्छी नहीं लगतीं,  
दूंधती है, कि कहीं सूखे हुये जिस्म मिलें!

उसको जंगल कि हवा रास बहुत है फिर भी,  
अब गरीबों कि कई बस्तियों पर देखा है हमला करते,  
आग अब मंदिरों-मस्जिद की गजा खाती है!  
लोगों के हाथों में अब आग नहीं—  
आग के हाथों में कुछ लोग हैं अब

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

शहर में आदमी कोई भी नहीं क़त्ल हुआ,  
नाम थे लोगों के जो, क़त्ल हुये.

सर नहीं काटा, किसी ने भी, कहीं पर कोई—  
लोगों ने टोपियाँ काटी थीं कि जिनमें सर थे!

और ये बहता हुआ सुर्ख लहू है जो सड़क पर,  
जबह होती हुई आवाजों की गर्दन से गिरा था

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

रात जब मुंबई की सड़कों पर  
अपने पंजों को पेट में लेकर  
काली बिल्ली की तरह सोती है  
अपनी पलकें नहीं गिराती कभी,-  
साँस की लंबी लंबी बौछारें  
उड़ती रहती हैं खुशक साहिल पर!

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

अल्फाज जो उगते, मुरझाते, जलते, बुझते  
रहते हैं मेरे चारों तरफ,  
अल्फाज जो मेरे गिर्द पतंगों की सूरत उड़ते  
रहते हैं रात और दिन  
इन लफ़ज़ों के किरदार हैं, इनकी शक्तें हैं,  
रंग रूप भी हैं— और उम्रें भी!

कुछ लफ़ज़ बहुत बीमार हैं, अब चल सकते नहीं,

कुछ लफ़्ज़ तो बिस्तरेमर्ग पे हैं,  
कुछ लफ़्ज़ हैं जिनको चोटें लगती रहती हैं,  
मैं पट्टियाँ करता रहता हूँ!

अल्फाज़ कई, हर चार तरफ बस यू हीं

थूकते रहते हैं,

गाली की तरह-

मतलब भी नहीं, मक्सद भी नहीं-

कुछ लफ़्ज़ हैं मुँह में रखे हुए

चुइंगगम की तरह हम जिनकी जुगाली करते हैं!

लफ़्ज़ों के दाँत नहीं होते, पर काटते हैं,

और काट लें तो फिर उनके जख्म नहीं भरते!

हर रोज मदरसों में 'टीचर' आते हैं गाले भर भर के,

छः छः घंटे अल्फाज लुटाते रहते हैं,

बरसों के घिसे, बेरंग से, बेआहंग से,

फीके लफ़्ज़ कि जिनमे रस भी नहीं,

## मानि भी नहीं!

एक भीगा हुआ, छल्का छल्का, वह लफ़्ज़ भी है,  
जब दर्द छुए तो आँखों में भर आता है  
कहने के लिये लब हिलते नहीं,  
आँखों से अदा हो जाता है!!



सुना है मिट्टी पानी का अज़ल से एक रिश्ता है,  
जड़े मिट्टी में लगती हैं,  
जड़ों में पानी रहता है.

तुम्हारी आँख से आँसू का गिरना था कि दिल  
में दर्द भर आया,  
ज़रा से बीज से कोंपल निकल आयी!!

जड़े मिट्टी में लगती हैं,

जड़ों में पानी रहता है!!

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

शीशम अब तक सहमा सा चुपचाप खड़ा है,

भीगा भीगा ठिठुरा ठिठुरा.

बूँदें पत्ता पत्ता कर के,

टप टप करती टूटती हैं तो सिसकी की आवाज

आती है!

बारिश के जाने के बाद भी,

देर तलक टपका रहता है !

तुमको छोड़े देर हुई है-

आँसू अब तक टूट रहे हैं

÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷÷

मुँह ही मुँह कुछ बुझबुझ करता, बहता है

ये बुझा दरिया!

कोई पूछे तुझको क्या लेना, क्या लोग किनारों

पर करते हैं,

तू मत सुन, मत कान लगा उनकी बातों पर!

घाट पे लच्छी को गर झूठ कहा है साले माधव ने,  
तुझको क्या लेना लच्छी से? जाये, जा के ढूब मरे!

यही तो दुःख है दरिया को!

जन्मी थी तो "आँख नाल" उसी के हाथ में सौंपी

थी झूलन दाई ने,

उसने ही सागर पहुंचाये थे वह "लीडे",

कल जब पेट नजर आयेगा, ढूब मरेगी

और वह लाश भी उसको ही गुम करनी होगी!

लाश मिली तो गाँव वाले लच्छी को बदनाम करेंगे!!

मुँह ही मुँह, कुछ बुझबुझ करता, बहता है

ये बुड्डा दरिया!!!

~~~~~

## मुँह ही मुँह, कुछ बुड्बुड़ करता, बहता है ये बुद्धा दरिया

दिन दोपहरे, मैंने इसको खरटि लेते देखा है  
ऐसा चित बहता है दोनों पाँव पसारे  
पत्थर फेंकें, टांग से खेंचें, बगले आकर चाँच मारें  
टस से मस होता ही नहीं है  
चौंक उठता है जब बारिश की बूँदें  
आ कर चुभती हैं  
धीरे धीरे हांफने लाग जाता है उसके पेट का पानी.  
तिल मिल करता, रेत पे दोनों बाहें मारने लगता है  
बारिश पतली पतली बूँदों से जब उसके पेट में  
गुदगुद करती है!

मुँह ही मुँह कुछ बुड्बुड़ करता रहता है

ये बुद्धा दरिया!!

~~~~~

मुँह ही मुँह कुछ बुझबुझ करता, बहता है  
ये बुद्धा दरिया!

पेट का पानी धीरे धीरे सूख रहा है,  
दुबला दुबला रहता है अब!  
कूद के गिरता था ये जिस पत्थर से पहले,  
वह पत्थर अब धीरे से लटका के इस को  
अगले पत्थर से कहता है,-  
इस बुद्धे को हाथ पकड़ के, पार करा दे!!

मुँह ही मुँह कुछ बुझबुझ करता, बहता रहता  
है ये दरिया!

छोटी छोटी खाहिशें हैं कुछ उसके दिल में-  
रेत पे रेंगते रेंगते सारी उम्र कटी है,

पुल पर चढ के बहने की ख्वाहिश है दिल में!

जाडो में जब कोहरा उसके पूरे मुँह पर आ जाता है,  
और हवा लहरा के उसका चेहरा पोंछ के जाती है—

ख्वाहिश है कि एक दफा तो  
वह भी उसके साथ उड़े और  
जंगल से गायब हो जाये!!  
कभी कभी यूँ भी होता है,  
पुल से रेल गुजरती है तो बहता दरिया,  
पल के पल बस रुक जाता है—

~~~~~

इतनी सी उम्मीद लिये—  
शायद फिर से देख सके वह, इक दिन उस  
लड़की का चेहरा,  
जिसने फूल और तुलसी उसको पूज के अपना  
वर माँगा था—

उस लड़की की सूरत उसने,  
अक्स उतारा था जब से, तह में रख ली थी!!

~~~~~

खड़खड़ाता हुआ निकला है उफुक से सूरज,  
जैसे कीचड़ में फँसा पहिया धकेला हो किसी ने  
चिब्बे टिब्बे से किनारों पे नज़र आते हैं.  
रोज़ सा गोल नहीं है!

उधरे-उधरे से उजाले हैं बदन पर  
उर चेहरे पे खरोचों के निशाँ हैं!!

#####
# # # # # # # # # # # # # # # # # #

रात जब गहरी नींद में थी कल  
एक ताज़ा सफेद कैनवस पर,  
आतिशी सुख्ख रंगों से,  
मैंने रौशन किया था इक सूरज!

सुबह तक जल चुका था वह कैनवस,

राख बिखरी हुई थी कमरे में!!

#####

"जोरहट" में एक दफा

दूर उफुक के हलके हलके कोहरे में

'हेमन बरुआ' के चाय बागान के पीछे,

चान्द कुछ ऐसे रखा थ,-- --

जैसे चीनी मिट्टी की, चमकीली 'कैटल' राखी हो!!

#####

रात को फिर बादल ने आकर

गीले गीले पंजों से जब दरवाजे पर दस्तक दी,

झट से ऊठ के बैठ गया मैं बिस्तर में

अक्सर नीचे आकर रे कच्ची बस्ती में,

लोगों पर गुरता है

लोग बेचारे डाम्भर लीप के दीवारों पर-

बंद कर लेते हैं झिरयाँ  
ताकि झाँक ना पाये घर के अंदर-

लेकिन, फिर भी—  
गुरता, चिन्धार्ता बादल—  
अक्सर ऐसे लूट के ले जाता है बस्ती,  
जसे ठाकुर का कोई गुंडा,  
बदमस्ती करता निकले इस बस्ती से!!

=====

कल सुबह जब बारिश ने आकर खिड़की पर  
दस्तक दी, थी  
नींद में था मैं—बाहर अभी अँधेरा था!

ये तो कोई वक्त नहीं था, उठ कर उससे मिलने का!  
मैंने पर्दा खींच दिया—  
गीला गीला इक हवा का झाँका उसने

फूँका मेरे मुँह पर, लैकिन—  
मेरी 'सेन्स आफ ह्युमर' भी कुछ नींद में थी—  
मैंने उठकर ज़ोर से खिड़की के पट  
उस पर भेड़ दिए—  
और करवट लेकर फिर बिस्तर में ढूब गया!

शयद बुरा लगा था उसको—  
गुस्से में खिड़की के काँच पे  
हत्थड़ मार के लौट गयी वह, दोबारा फिर  
आयी नहीं— —  
खिड़की पर वह चटखा काँच अभी बाकी है!!

=====

कुछ दिन से पड़ोसी के  
घर में सन्नाटा है,  
ना रेडियो चलता है,  
ना रात को आँगन में

उड़ते हुए बर्तन हैं।

उस घर का पला कुत्ता—  
खाने के लिये दिन भर,  
आ जाता है मेरे घर  
फिर रात उसी घर की  
दहलीज पे सर रखकर  
सो जाया करता है!

=====

आँगन के अहाते में  
रस्सी पे टंगे कपड़े  
अफसाना सुनाते हैं  
एहवाल बताते हैं  
कुछ रोज़ रूठाई के,  
माँ बाप के घर रह कर  
फिर मेरे पड़ोसी की

बीबी लौट आयी है।

दो चार दिनों में फिर,  
पहले सी फिज़ा होगी,  
आकाश भरा होगा,  
और रात को आँगन से  
कुछ "कामेट" गुज़रेंगे!  
कुछ तश्तरियां उतरेंगी!

=====

ये आइना बोलने लगा है,  
मैं जब गुजरता हूँ सीढ़ियों से,  
ये बातें करता है—आते जाते में पूछता है  
"कहाँ गई वह फतुई तेरी—  
ये कोट नेक-टाई तुझपे फबती नहीं, ये  
मनसूई लग रही है—"  
ये मेरी सूरत पे नुक्काचीनी तो ऐसी करता है

जैसे मैं उसका अक्स हूँ—  
और वो जायजा ले रहा है मेरा.  
"तुम्हारा माथा कुशादा होने लगा है लेकिन,  
तुम्हारे 'आइब्रो' सिकुड़ रहे हैं—  
तुम्हरी आँखों का फासला कमता जा रहा है—  
तुम्हारे माथे की बीच वाली शिकन बहुत गहरी  
हो गई है—"

कभी कभी बेतकल्लुफी से बुलाकर कहता है!  
"यार भौलू—  
तुम अपने दफ्तर की मेज़ की दाहिनी तरफ की  
दराज में रख के  
भूल आये हो मुस्कराहट,  
जहाँ पे पोशीदा एक फाइल रखी थी तुमने  
वो मुस्कुराहट भी अपने होठों पे चस्पाँ कर लो,"

इस आईने को पलट के दीवार की तरफ भी  
लगा चुका हूँ–  
ये चुप तो हो जाता है मगर फिर भी देखता है–  
ये आइना देखता बहुत है!  
ये आइना बोलता बहुत है!!

=====

मैं जब भी गुजरा हूँ इस आईने से,  
इस आईने ने कुतर लिया कोई हिस्सा मेरा.  
इस आईने ने कभी मेरा पूरा अक्स वापस  
नहीं किया है–  
छुपा लिया मेरा कोई पहलू,  
दिखा दिया कोई ज़ाविया ऐसा,  
जिससे मुझको मेरा कोई ऐब दिख ना पाए.

मैं खुद को देता रहूँ तसल्ली  
कि मुझ सा तो दूसरा नहीं है !!

एक पश्चिमानी रहती है

उलझन और गिरानी भी...

आओ फिर से लड़कर देंखें

शायद इससे बेहतर कोई

और सबब मिल जाए हमको

फिर से अलग हो जाने का !!

रात को अक्सर होता है परवाने आकर,

टेबल लैम्प के गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं

सुनते हैं, सर धुनते हैं

सुन के सब अशा'आर ग़ज़ल के

जब भी मैं दीवान-ए-ग़ालिब

खोल के पढ़ने बैठता हूँ

सुबह फिर दीवान के रौशन सफ़हों से

परवानों की राख उठानी पड़ती है.

=====

याद है बारिशों का दिन पंचम  
जब पहाड़ी के नीचे वादी में,  
धुंध से झाँक कर निकलती हुई,  
रेल की पटरियां गुजरती थीं—!

धुंध में ऐसे लग रहे थे हम,  
जैसे दो पौधे पास बैठे हों.  
हम बहुत देर तक वहाँ बैठे,  
उस मुसाफिर का जिक्र करते रहे,  
जिसको आना था पिछली शब, लेकिन  
उसकी आमद का वक्त टलता रहा!

देर तक पटरियों पे बैठे हुये  
ट्रेन का इंतज़ार करते रहे.  
ट्रेन आई, ना उसका वक्त हुआ,

और तुम यों ही दो कदम चलकर,  
धुंद पर पाँव रख के चल भी दिए

मैं अकेला हूँ धुंध में पंचम!!

=====

इक सन्नाटा भरा हुआ था,  
एक गुब्बारे से कमरे में,  
तेरे फोन की घंटी के बजने से पहले.  
  
बासी सा माहौल ये सारा  
थोड़ी देर को धड़का था  
  
साँस हिली थी, नब्ज़ चली थी,  
मायूसी की झिल्ली आँखों से उतरी कुछ लम्हों को—  
फिर तेरी आवाज़ को, आखरी बार "खुदा हाफिज़"  
कह के जाते देखा था!  
  
इक सन्नाटा भरा हुआ है,  
जिस्म के इस गुब्बारे में,

## तेरी आखरी फोन के बाद-!!

आठ ही बिलियन उम्र जमीं की होगी शायद  
ऐसा ही अंदाज़ा है कुछ 'साइंस' का  
चार अशारिया छः बिलियन सालों की उम्र तो  
बीत चुकी है  
कितनी देर लगा दी तुम ने आने में  
और अब मिल कर  
किस दुनिया की दुनियादारी सोच रही हो  
किस म़ज़हब और ज़ात और पात की फ़िक्र लगी है  
आओ चलें अब--  
तीन ही 'बिलियन' साल बचे हैं!

"वर्थ" जो सेंट है मिट्टी का  
"वर्थ" जो तुमको भला लगता है  
"वर्थ" के सेंट की खुश्कू थी थियेटर में

गयी रात के शो में,  
तुमको देखा तो नहीं सेंट की खुशबू से  
नज़र आती रही तुम !  
दो दो फिल्में थीं, बयक वक्त जो पर्दे पे रवां थीं,  
पर्दे पर चलती हुयी फिल्म के साथ,  
और इक फिल्म मेरे जहन पे भी चलती रही !

'एना' के रोल में जब देख रहा था तुमको,  
'टॉयस्टॉय' की कहानी में हमारी भी कहानी के  
सिरे जुड़ने लगे थे—  
सूखी मिट्टी पे चटकती हुई बारिश का वह मंजर,  
घास के सोंधे, हरे रंग,  
जिस्म की मिट्टी से निकली हुयी खुशबू की वो यादें—

मंजर-ए-रक्स में सब देख रहे तुम को,  
और मैं पाँव के उस ज़ख्मी अंगूठे पे बंधी पट्टी को,

शॉट के फ्रेम में जो आई ना थी  
और वह छोटा अदाकार जो उस रक्स में  
बे वजह तुम्हें छू के गुज़रता था,  
जिसे झिड़का था मैंने !  
मैंने कुछ शाट तो कटवा भी दिए थे उस के  
  
कोहरे के सीन में सचमुच ही ठिठुरती हुयी  
महसूस हुयीं  
हाँलाकि याद था गर्मी में बड़े कोट से  
उलझी थीं बहुत तुम !  
और मसनुई धुएँ ने जो कई आफतें की थीं,  
हँस के इतना भी कहा था तुमने !  
"इतनी सी आग है,  
और उस पे धुएँ को जो गुमां होता है वो  
कितना बड़ा है "  
बर्फ के सीन में उतनी ही हसीं थी कल रात,

जिसनी उस रात थीं, फिल्म के पहलगाम से  
जब लौटे थे दोनों,  
और होटल में खबर थी कि तुम्हारे शौहर,  
सुबह की पहली फ्लाईट से वहाँ पहुँचे हुए हैं.

रात की रात, बहुत कुछ था जो तबदील हुआ,  
तुमने उस रात भी कुछ गोलियाँ कहा लेने की  
कोशिश की थी,  
जिस तरह फिल्म के आखिर में भी  
"एना कैरेनिना"  
खुदकुशी करती है, इक रेल के नीचे आ कर--!

आखिरी सीन में जी चाहा कि मैं रोक दूँ उस  
रेल का इंजन,  
आँखे बंद कर लीं कि मालूम था वह 'एन्ड' मुझे!

पसेमंजर में बिलकती हुयी मौसीकी ने उस  
रिश्ते का अन्जाम सुनाया,  
जो कभी बाँधा था हमने !

"वर्थ" के सेंट की खुश्कू थी, थिएटर में  
गयी रात बहुत !

+++++

निजामे-जहाँ पढ़ के देखो तो कुछ इस तरह  
चल रहा है !

इराक़ और अमरीका की जंग छिड़ने के इमकान  
फिर बढ़ गए हैं.

अलिफ़ लैला की दास्ताँ वाला वो शहरे-बगादाद  
बिल्कुल तबाह हो चुका है.  
खबर है किसी शख्स ने गंजे सर पर भी अब  
बाल उगने की एक 'पेस्ट' ईज़िाद की है!

कपिलदेव ने चार सौ विकेटों का अपना

रिकार्ड कायम किया है।  
खबर है कि डायना और चाल्स अब, क्रिसमस  
से पहले अलग हो रहे हैं।  
किरोशा और सिलवानिया भी अलग होने ही  
के लिए लड़ रहे हैं।  
प्लास्टिक पे दस फीसदी टैक्स फिर बढ़ गया है।

ये पहली नवम्बर की खबरें हैं सारी,—  
निजामे जहाँ इस तरह चल रहा है !

मगर ये खबर तो कहीं भी नहीं है,  
कि तुम मुझसे नाराज़ बैठी हुई हो—  
निजामे-जहाँ किस तरह चल रहा है ?

=====

मैं कुछ-कुछ भूलता जाता हूँ अब तुझको,  
तेरा चेहरा भी अब धूँधलाने लगा है अब तख्युल में,

बदलने लग गया है अब यह सुब-हो-शाम का  
मामूल, जिसमें  
तुझसे मिलने का ही इक मामूल शामिल था!

तेरे खत आते रहते थे तो मुझको याद रहते थे  
तेरी आवाज़ के सुर भी!  
तेरी आवाज़ को काग़ज़ पे रख के, मैंने चाहा  
था कि 'पिन' कर लूँ  
वो जैसे तितलिओं के पर लगा लेता है कोई  
अपनी अलबम में--!  
तेरा 'बे'को दबा कर बात करना,  
"वाव" पर होठों का छल्ला गोल होकर घूम  
जाता था--!  
बहुत दिन हो गए देखा नहीं ना खत मिला कोई--  
बहुत दिन हो गए सच्ची !!  
तेरी आवाज़ की बौछार में भीगा नहीं हूँ मैं!

=====

ये राह बहुत आसान नहीं,  
जिस राह पे हाथ छुड़ा कर तुम  
यूँ तन तन्हा चल निकली हो  
इस खौफ से शायद राह भटक जाओ ना कहीं  
हर मोड़ पर मैंने नज़म खड़ी कर रखी है!

थक जाओ अगर—  
और तुमको ज़रूरत पड़ जाए,  
इक नज़म की ऊँगली थाम के वापस आ जाना!

=====

अगर ऐसा भी हो सकता—  
तुम्हारी नींद में सब ख्वाब अपने मुंतकिल करके,  
तुम्हें वो सब दिखा सकता, जो मैं ख्वाबों में  
अक्सर देखा करता हूँ—!  
ये हो सकता अगर मुमकिन—

तुम्हें मालूम हो जाता—  
तुम्हें मैं ले गया था सरहदों के पार "दीना"<sup>१</sup> मैं  
तुम्हें वो घर दिखाया था, जहाँ पैदा हुआ था मैं,  
जहाँ छत पर लगा सरियों का जंगला धूप से दिनभर  
मेरे आंगन में सतरंजी बनाता था, मिटाता था—!  
दिखायी थी तुम्हें वो खेतियाँ सरसों की "दीना"  
में कि जिसके पीले-पीले फूल तुमको  
खाब में कच्चे खिलाए थे.  
वहीं इक रास्ता था, "टहलियों" का, जिस पे  
मीलों तक पड़ा करते थे झूले, सोंधे सावन के  
उसी की सोंधी खुशबू से, महक उठती हैं आँखे  
जब कभी उस ख्वाब से गुज़रन्!  
तुम्हें 'रोहतास'<sup>२</sup> का 'चलता-कुआँ' भी तो  
दिखाया था,  
किले में बंद रहता था जो दिन भर, रात को  
गाँव में आ जाता था, कहते हैं,

तुम्हें "काला"<sup>३</sup> से "कालूवाल"<sup>४</sup> तक ले कर  
उड़ा हूँ मैं  
तुम्हें "दरिया-ए-झेलम"<sup>५</sup> पर अजब मंजर दिखाए थे  
जहाँ तरबूज पे लेटे हुये तैराक लड़के बहते रहते थे—  
जहाँ तगड़े से इक सरदार की पगड़ी पकड़ कर मैं  
नहाता, डुबकियाँ लेता, मगर जब गोता आ  
जाता तो मेरी नींद खुल जाती !!  
मगर ये सिर्फ ख्वाबों ही में मुमकिन है  
वहाँ जाने में अब दुश्शारियां हैं कुछ सियासत की.  
वतन अब भी वही है, पर नहीं है मुल्क अब मेरा  
वहाँ जाना हो अब तो दो-दो सरकारों के  
दसियों दफ्तरों से  
शक्ल पर लगवा के मोहरें ख्वाब साबित  
करने पड़ते हैं.

1. गुलज़ार का पैदाइशी कस्बा, जो कि आज जिला-

झेलम, पंजाब, पाकिस्तान में है। 2, 3, 4, ये सब ज़िला झेलम के  
मारुफ मकामात हैं।

=====

इक अदाकार हूँ मैं!

मैं अदाकार हूँ ना

जीनी पड़ती है कई जिंदगियां एक हयाती में मुझे!

मेरा किरदार बदल जाता है, हर रोज ही सेट पर

मेरे हालात बदल जाते हैं

मेरा चेहरा भी बदल जाता है,

अफसाना-ओ-मंज़र के मुताबिक

मेरे आदात बदल जाती हैं।

और फिर दाग नहीं छूटते पहनी हुई पोशाकों के

खस्ता किरदारों का कुछ चूरा सा रह जाता है तह में

कोई नुकीला सा किरदार गुज़रता है रगों से

तो खराशों के निशाँ देर तलक रहते हैं दिल पर

जिन्दगी से ये उठाए हुए किरदार  
ख्याली भी नहीं हैं  
कि उतर जाएँ वो पंखे की हवा से  
स्याही रह जाती है सीने में,  
अदीबों के लिखे जुमलों की  
सीमीं परदे पे लिखी  
साँस लेती हुई तहरीर नज़र आता हूँ  
मैं अदाकार हूँ लेकिन  
सिर्फ अदाकार नहीं  
वक्त की तस्वीर भी हूँ।

---

तुचे छीले गए कोहसार ने कोशिश तो की  
गिरते हुए इक पेड़ को रोकें,  
मगर कुछ लोग कंधे पर उठा कर उसको  
पगड़ंडी के रस्ते ले गये थे—कारखानों में!  
फलक को देखता ही रह गया पथराइ आँखों से!

बहुत नोची है मेरी खाल इंसाँ ने,  
बहुत छीलें हैं मेरे सर से जंगल उसके तेशों ने,  
मेरे दरियाओं  
मेरे आबसारों को बहुत नंगा किया है,  
इस हवस आलूद-इंसाँ ने—!!  
मेरा सीना तो फट जाता है लावे से,  
मगर इंसान का सीना नहीं फटता—  
वह पत्थर है—!!!

=====

मेरी दहलीज़ पर बैठी हुयी जानो पे सर रखे  
ये शब अफ़सोस करने आई है कि मेरे घर पे  
आज ही जो मर गया है दिन  
वह दिन हमजाद था उसका!

वह आई है कि मेरे घर में उसको दफ्न कर के,

इक दीया दहलीज़ पे रख कर,  
निशानी छोड़ दे कि मह्ब है ये कब्र,  
इसमें दूसरा आकर नहीं लेटे!

मैं शब को कैसे बतलाऊँ,  
बहुत से दिन मेरे आँगन में यूँ आधे अधूरे से  
कफन ओढ़े पड़े हैं कितने सालों से,  
जिन्हें मैं आज तक दफना नहीं पाया!!

=====

दो बजने में आठ मिनट थे—  
जब वह भारी बोरियों जैसी टांगों से बिल्डिंग  
की छत पर पहुँचा था  
थोड़ी देर को छत के फर्श पर बैठ गया था

छत पर एक कबाड़ी घर था,  
सूखा सुकड़ा तिल्ले वाला, सूद निचोड़ जागीरे

का जूता वो पहचानता था,  
इस बिल्डिंग में जिसका जो सामान मरा, बेकार  
हुआ, वो ऊपर ला के फेंक गया!

उसके पास तो कितना कुछ था,—  
कितना कुछ जो टूट चुका है, टूट रहा है—  
शौहर और वतन की छोड़ी हमशीरा कल पाकिस्तान  
से बच्चे लेकर लौट आई है!  
सब के सब कुछ खाली बोतलों डिब्बों जैसे लगते हैं,  
चिब्बे, पिचके, बिन लेबल के!  
सुबह भी देखा तो बूढ़ी दादी सोयी हुई थी,—  
मरी नहीं थी!  
जब दोपहर को, पानी पी कर, छत पर आया था  
वो तब भी,  
मरी नहीं थी, सोयी हुई थी!  
जी चाहा उसको भी ला कर छत पे फेंक दे,

जैसे दूटे एक पलंग की पुश्त पड़ी है!

दूर किसी घड़ियाल ने साढ़े चार बजाये,  
दो बजने में आठ मिनट थे, जब वो छत पर आया था!  
सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते उसने सोच लिया था,  
जब उस पार "ट्रैफिक लाइट" बदलेगी  
रुक जायेंगी सारी कारें  
तब वो पानी की टंकी के ऊपर चढ के, "पैरापेट" पर  
उतरेगा, और –  
चौदहवीं मंजिल से कूदेगा!  
उसके बाद अँधेरे का इक वक़फा होगा!  
क्या वो गिरते गिरते आँखें बंद कर लेगा?  
या आँखें कुछ और ज्यादा फट जायेंगी?  
या बस—— सब कुछ बुझ जायेगा?  
गिरते गिरते भी उसने लोगों का इक कोहराम सुना!  
और लहू के छीटें उड़ कर पोपट की दूकान

के ऊपर तक भी जाते देख लिये थे!

रात का एक बजा था जब वह सीढ़ियों से  
फिर नीचे उत्तरा,  
और देखा फुटपाथ पे आ कर,  
'चॉक' से खींचा, लाश का नक्शा वहीं पड़ा था,  
जिसको उसने छत के एक कबाड़ी घर से फेंका था—!!

=====

=====

बस एक लम्हे का झगड़ा था  
दर-ओ-दीवार पे ऐसे छनाके से गिरी आवाज़  
जैसे काँच गिरता है  
हर एक शय में गई  
उड़ती हुई, चलती हुई, किरचें  
नज़र में, बात में, लहजे में,  
सौच और साँस के अन्दर

लहू हीना था इक रिश्ते का  
सो वो हो गया उस दिन  
उसी आवाज़ के टुकड़े उठा के फर्श से उस शब्द  
किसी ने काट ली नब्जें  
न की आवाज़ तक कुछ भी  
कि कोई जाग न जाए  
बस एक लम्हे का झगड़ा था

=====

मचल के जब भी आँखों से छलक जाते हैं दो आँसू  
सुना है आबशारों को बड़ी तकलीफ होती है(१)

खुदारा अब तो बुझ जाने दो इस जलती हुई लौ को  
चरागों से मज़ारों को बड़ी तकलीफ होती है(२)

कहू क्या वो बड़ी मासूमियत से पूछ बैठे हैं  
क्या सचमुच दिल के मारों को बड़ी तकलीफ होती है(३)

तुम्हारा क्या तुम्हें तो राह दे देते हैं काँटे भी  
मगर हम खांकसारों को बड़ी तकलीफ़ होती है(४)

=====

बोलिये सुरीली बोलियाँ  
खट्टी मीठी आँखों की रसीली बोलियाँ

रात में घोले चाँद की मिश्री  
दिन के ग्राम नमकीन लगते हैं  
नमकीन आँखों की नशीली बोलियाँ

गूंज रहे हैं झूबते साये  
शाम की खुशबू हाथ ना आये  
गूंजती आँखों की नशीली बोलियाँ

=====

मेरे रौशनदार में बैठा एक कबूतर

जब अपनी मादा से गुटरगूँ कहता है  
लगता है मेरे बारे में उसने कोई बात कही।  
शायद मेरा यूँ कमरे में आना और मुखल होना  
उनको नावाजिब लगता है।  
उनका घर है रौशनदान में  
और मैं एक पड़ोसी हूँ  
उनके सामने एक वसी आकाश का आंगन  
हम दरवाजे भेड़ के, इन दरबां में बन्द हो जाते हैं  
उनके पर हैं और परवाज़ ही खसलत है  
आठवीं दसवीं मंज़िल के छज्जों पर वो  
बेखौफ टहलते रहते हैं  
हम भारी-भरकम, एक क़दम आगे रखा  
और नीचे गिर के फैत हुए।

बोले गुटरगूँ...

कितना वज़न लेकर चलते हैं ये इन्सान

कौन सी शै है इसके पास जो इतराता है  
ये भी नहीं कि दो ग़ज़ की परवाज़ करें।

आँखें बन्द करता हूँ तो माथे के रौशनदान से अक्सर  
मुझको गुटरगूँ की आवाजें आती हैं!!

=====

बारिश आने से पहले  
बारिश से बचने की तैयारी जारी है  
सारी दरारें बन्द कर ली हैं  
और लीप के छत, अब छतरी भी मढ़वा ली है  
खिड़की जो खुलती है बाहर  
उसके ऊपर भी एक छज्जा खींच दिया है  
मैंन सड़क से गली में होकर, दरवाजे तक आता रास्ता  
बजरी-मिट्टी डाल के उसको कूट रहे हैं!  
यहीं कहीं कुछ गड़हों में  
बारिश आती है तो पानी भर जाता है

जूते पाँव, पाँए चे सब सन जाते हैं

गले न पड़ जाए सतरंगी  
भीग न जाएँ बादल से  
सावन से बच कर जीते हैं  
बारिश आने से पहले  
बारिश से बचने की तैयारी जारी है !!

=====

एक नदी की बात सुनी...  
इक शायर से पूछ रही थी  
रोज़ किनारे दोनों हाथ पकड़ कर मेरे  
सीधी राह चलाते हैं  
रोज़ ही तो मैं  
नाव भर कर, पीठ पे लेकर  
कितने लोग हैं पार उतार कर आती हूँ ।

रोज़ मेरे सीने पे लहरें  
नाबालिग़ बच्चों के जैसे  
कुछ-कुछ लिखी रहती हैं।

क्या ऐसा हो सकता है जब  
कुछ भी न हो  
कुछ भी नहीं...  
और मैं अपनी तह से पीठ लगा के इक शब रुकी रहूँ  
बस ठहरी रहूँ  
और कुछ भी न हो !  
जैसे कविता कह लेने के बाद पड़ी रह जाती है,  
मैं पड़ी रहूँ... !

=====

दरख्त रोज़ शाम का बुरादा भर के शाखों में  
पहाड़ी जंगलों के बाहर फेंक आते हैं।  
मगर वो शाम...

फिर से लौट आती है, रात के अन्धेरे में  
वो दिन उठा के पीठ पर  
जिसे मैं जंगलों में आरियों से  
शाख काट के गिरा के आया था !!

=====

अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो, कि दास्ताँ आगे और भी है  
अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!  
अभी तो टूटी है कच्ची मिट्टी, अभी तो बस जिस्म ही गिरे हैं  
अभी तो किरदार ही बुझे हैं।  
अभी सुलगते हैं रूह के ग्राम, अभी धड़कते हैं दर्द दिल के  
अभी तो एहसास जी रहा है।

यह लौ बचा लो जो थक के किरदार की हथेली से गिर पड़ी है  
यह लौ बचा लो यहीं से उठेगी जुस्तजू फिर बगूला बनकर  
यहीं से उठेगा कोई किरदार फिर इसी रोशनी को लेकर  
कहीं तो अंजाम-ओ-जुस्तजू के सिरे मिलेंगे

## अभी न पर्दा गिराओ, ठहरो!

=====

किस क़दर सीधा सहल साफ़ है यह रस्ता देखो  
न किसी शाख का साया है, न दीवार की टेक  
न किसी आँख की आहट, न किसी चेहरे का शोर  
न कोई दाग जहाँ बैठ के सुस्ताए कोई  
दूर तक कोई नहीं, कोई नहीं, कोई नहीं

चन्द क़दमों के निशाँ हाँ, कभी मिलते हैं कहीं  
साथ चलते हैं जो कुछ दूर फ़क़त चन्द क़दम  
और फिर टूट के गिरते हैं यह कहते हुए  
अपनी तनहाई लिये आप चलो, तन्हा, अकेले  
साथ आए जो यहाँ, कोई नहीं, कोई नहीं  
किस क़दर सीधा, सहल साफ़ है यह रस्ता

=====

बफ़ पिघलेगी जब पहाड़ों से

और वादी से कोहरा सिमटेगा  
बीज अंगड़ाई लेके जाएंगे  
अपनी अलसाई आँखें खोलेंगे  
सब्ज़ा बह निकलेगा ढलानों पर

गौर से देखना बहारों में  
पिछले मौसम के भी निशाँ होंगे  
कोंपलों की उदास आँखों में  
आँसुओं की नमी बची होगी।

=====

वक्त को आते न जाते न गुजरते देखा  
न उतरते हुए देखा कभी इलहाम की सूरत  
जमा होते हुए एक जगह मगर देखा है

शायद आया था वो ख्वाब से दबे पांव ही  
और जब आया ख्यालों को एहसास न था

आँख का रंग तुलु होते हुए देखा जिस दिन  
मैंने चूमा था मगर वक्त को पहचाना न था

चंद तुलाते हुए बोलों में आहट सुनी  
दूध का दांत गिरा था तो भी वहाँ देखा  
बोस्की बेटी मेरी, चिकनी-सी रेशम की डली  
लिपटी लिपटाई हुई रेशम के तागों में पड़ी थी  
मुझे एहसास ही नहीं था कि वहाँ वक्त पड़ा है  
पालना खोल के जब मैंने उतारा था उसे बिस्तर पर  
लोरी के बोलों से एक बार छुआ था उसको  
बढ़ते नाखूनों में हर बार तराशा भी था

चूड़ियाँ चढ़ती-उतरती थीं कलाई पे मुसलसल  
और हाथों से उतरती कभी चढ़ती थी किताबें  
मुझको मालूम नहीं था कि वहाँ वक्त लिखा है

गुलज़ार

वक्त को आते न जाते न गुज़रते देखा  
जमा होते हुए देखा मगर उसको मैंने  
इस बरस बोस्की अठारह बरस की होगी

=====

रिश्ते बस रिश्ते होते हैं

कुछ इक पल के  
कुछ दो पल के

कुछ परों से हल्के होते हैं  
बरसों के तले चलते-चलते  
भारी-भरकम हो जाते हैं

कुछ भारी-भरकम बर्फ के-से  
बरसों के तले गलते-गलते  
हलके-फुलके हो जाते हैं

नाम होते हैं रिश्तों के  
कुछ रिश्ते नाम के होते हैं  
रिश्ता वह अगर मर जाये भी  
बस नाम से जीना होता है

बस नाम से जीना होता है  
रिश्ते बस रिश्ते होते हैं